بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 26
Issue - 09

राह-ए-ईमान

सितम्बर
2024 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत).....4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 26.07.2024).....8
7. ईसा मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु व जीवन की आस्था का महत्त्व.....12
8. अहमदिया मुस्लिम रिसर्च एसोसिएशन (AMRA) का पहला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन.....23

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

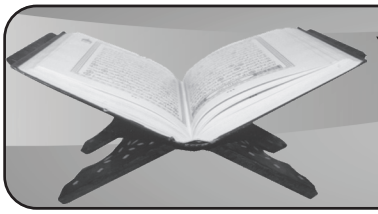

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

क़ुरआन की आयत का अनुवादः- 88- हे ईमान लाने वालो ! जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल ठहराया है तुम उस में से पवित्र चीज़ों को हराम न ठहराओ और निर्धारित सीमाओं से आगे न बढ़ो तथा अल्लाह सीमा से आगे बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता।

89- और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल (वैध) और पवित्र चीज़ें खाओ और अल्लाह के लिए संयम धारण करो, जिस पर तुम ईमान रखते हो।

91- हे ईमान लाने वालो ! शराब, जुआ और मूर्तिपूजा तथा पाँसे फेंकना केवल अपवित्र एवं शैतान के काम हैं। अतः तुम इन से बचो ताकि तुम सफल हो जाओ।

92- शैतान केवल यह चाहता है कि वह तुम्हारे बीच शराब और जुए के द्वारा शत्रुता और वैर डाल दे तथा अल्लाह की याद एवं नमाज़ से रोक दे। अब क्या तुम इन बातों से रुक सकते हो?

(सूरह अल माइदा : 88,89,91,92)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवादः हज़रत सूबान वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब नमाज़ से फारिग़ होते तो तीन बार इस्तिग़फार करते तो यह दुआ मांगते हे अल्लाह तआला! तू सलामती देने वाला है। तेरी ओर से सलामती मिलती है। ए महिमा और आदर वाले ख़ुदा! तू बरकतों का मालिक है। इमाम औज़ाई जो इस हदीस के रावियों में से हैं। उनसे पूछा गया था। हुज़ूर इस्तिग़फार कैसे करते थे तो उन्होंने बताया अस्तग़फ़िरुल्लाह अस्तग़फ़िरुल्लाह! पढ़ते थे अर्थात अल्लाह तआला से माफी माँगता हूँ। (मुस्लिम किताबुस्सलात)

अनुवाद- हज़रत मआज़ वर्णन करते हैं कि एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका हाथ पकड़ा और कहा। मुआज़ ख़ुदा तआला की कसम! मुझे तुम से मुहब्बत है मैं तुम्हें ताकीद करता हूँ कि किसी नमाज़ के बाद यह दुआ छूटने न पाए।

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ۔

अनुवाद- हे मेरे अल्लाह! मेरी मदद फरमा कि मैं तेरा ज़िक्र करूं, तेरा शक्र करता रहूँ और अच्छी तरह तेरी इबादत करूं। (अबू दाऊद किताबुस्सलात)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

दीन को हर हाल में दुनिया पर प्रधानता देनी चाहिए

"देखो दो प्रकार के लोग होते हैं, प्रथम वे हैं जो इस्लाम क़ुबूल करके दुनिया के कारोबार और ितजारतों (व्यापार) में लीन हो जाते हैं और शैतान उनके सिर पर सवार हो जाता है। मेरे कहने का यह उद्देश्य नहीं कि तिजारत (व्यापार) करना मना है। नहीं, बिल्कुल नहीं। सहाबा किराम भी तिजारतें किया करते थे, लेकिन वे दीन को दुनिया पर प्रधानता देते थे। उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया तो इस्लाम के बारे में ऐसा सच्चा ज्ञान हासिल किया कि जिसने उनके दिलों को विश्वास से भर दिया। यही कारण था कि वे किसी मैदान में शैतान के हमले से नहीं डगमगाए। कोई बात उनको सच्चाई के बयान से नहीं रोक सकी। मेरा उद्देश्य इससे केवल यह है कि जो पूरी तरह दुनिया ही के बन्दे और ग़ुलाम हो जाते हैं, मानो संसार के पुजारी हो जाते हैं। ऐसे लोगों पर शैतान क़ाबू पा लेता है और अपना प्रभुत्व जमा लेता है। द्वितीय वे जो दीन की तरक़्क़ी की फ़िक्र में लग जाते हैं। यह वह गिरोह होता है जो हिज़्बुल्लाह (अल्लाह की जमाअत) कहलाता है और वह शैतान और उसके गिरोह पर विजय पाता है। धन चूँकि तिजारत (व्यापार) से बढ़ता है इसलिए ख़ुदा तआला ने भी दीन की चाहत और उसकी तरक़्क़ी की इच्छा को एक तिजारत (व्यापार) ही ठहराया। अत: फ़रमाया कि:-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ (सूर: अल-सफ़्फ़- 11)

अनुवाद- क्या मैं तुम्हें एक ऐसे व्यापार की जानकारी दूँ जो तुम्हें एक दर्दनाक अज़ाब से मुक्ति देगा। मैं ज़्यादा उम्मीद उन पर करता हूँ जो दीनी तरक़्क़ी और चाहत को कम नहीं करते। जो इस चाहत और शौक़ को कम करते हैं मुझे अन्देशा है कि शैतान उन पर क़ाबू न पा ले। इसलिए कभी सुस्त नहीं होना चाहिए। हर बात को जो समझ में न आए पूछना चाहिए ताकि ज्ञान में वृद्धि हो। पूछना हराम नहीं, न मानने के बावजूद भी पूछना चाहिए, और ज्ञान में वृद्धि के लिए भी। जो ज्ञान को बढ़ाना चाहता है उसको चाहिए कि क़ुर्आन शरीफ़ को ग़ौर से पढ़े। जहाँ समझ में न आए पूछे। अगर कोई बातें समझ न सके तो दूसरों से पूछकर फ़ायदा उठाए।

क़ुर्आन शरीफ़ दीन (धर्म) का सागर है जिसके अन्दर बड़े-बड़े अद्वितीय और अनमोल मोती मौजूद हैं। जब तुम किसी ईसाई से मिलोगे तो देखोगे कि उनमें भाँड़ों और हँसी ठट्ठा करने वालों की तरह ईमानदारी नहीं नज़र नहीं आएगी। यूँ तो उनमें से बहुत से ऐसे हैं जो यह दावे करते हैं कि हम क़ुर्आन शरीफ़ का तर्जुमा जानते हैं। उन्होंने रट्टा तो मारा है, लेकिन उनमें रूहानियत (आध्यात्मिकता) नहीं है और इसका हमें बार-बार अनुभव हुआ है। जब उनको बुलाया गया तो उन्होंने फ़रार इख़्तियार किया। यदि सचमुच उनमें रूहानियत (आध्यात्मिकता) है, अगर वास्तव में उनका ज्ञान एवं अध्यात्म विश्वास के स्तर तक पहुँचा हुआ है तो फिर क्या कारण है कि वे फ़रार इख़्तियार करते हैं।" (मल्फ़ूज़ात जिल्द-2)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

क्या तुम इन सब लोगों से अधिक विद्वान हो या तुम पागल हो। वे लोग बातचीत में तुम से कहीं अधिक होशियार थे बल्कि तुम उन लोगों की तुलना में अभी बच्चे हो। अन्तत: उनका अंजाम समस्त लोकों के रब्ब का प्रकोप, बदनामी और अपमान हुआ। और जब अल्लाह किसी क़ौम की रुसवाई का इरादा करता है तो (उस क़ौम के लोग) उसके वालियों से शत्रुता रखने लगते और उसके प्रियजनों को दु:ख देते तथा उसके चुने हुए बन्दों को बुरा-भला कहते हैं और अल्लाह युद्ध के लिए उनके मुकाबले पर आ जाता है और एक ही चोट से उनके मुंह फेर देता तथा उन्हें निराश्रय कर देता है। क्या तुम उन (विरोधियों) के बारे में विचार नहीं करते (कि उनका क्या अंजाम हुआ)। निसन्देह अल्लाह ने हमारे लिए अपनी हर प्रकार की सहायता उतारी और पृथ्वी को उसके चारों ओर से कम कर रहा है और अपनी कृपा से हमारी रक्षा करता है। और अपनी सहायता के लिहाफों में हमें ऐसे छिपाए हुए है कि उपद्रवियों की कोई युक्ति हमें हानि नहीं पहुंचा सकती। वह जानता है कि जो उसका है और जो उसके ग़ैर (अन्य) का है। वह हर चलने वाले की चाल पर दृष्टि रखता है और हद से बढ़ने वाली क़ौम को हिदायत नहीं देता। और पापियों का विनाश कर देता तथा झूठ गढ़ने वालों के नाम संसार से मिटा देता है। वह बड़ा स्वाभिमानी और प्रतिशोध लेने वाला है। वह फूट डालने वाले तथा उपद्रव फ़ैलाने वाले को जानता है और निकट के समय में ही वह झूठ गढ़ने वालों को पकड़ता है और आंख झपकने से भी शीघ्र अपना अज़ाब उतारेगा। हे शत्रुओं के गिरोह! उन लोगों की भांति तौबा करो जो कृपालु ख़ुदा के प्रकोप से डरते हैं तथा जो घाटे का दिन आने से पहले उसकी ओर झुके और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अपने नफ्सों में परिवर्तन पैदा किया। दया मांगो, क्योंकि वह सर्वाधिक दयालु है। हे धोखा खाए हुए इंसान! अपनी मूर्खताओं पर शर्मिंदा हो और अन्यायों पर क्षमा मांग तथा अपनी हानि और अपने नैतिक पतन तथा अपने दोष प्रकट होने पर विचार कर और डरने वालों के समान स्वयं को डाँट-डपट कर।

जान ले कि जो भी ईसा (अलैहिस्सलाम) के जीवित रहने का कोई निशान ढूंढने के लिए खड़ा होता है तो वह उस व्यक्ति के समान है जो उस्तरे से अपनी नाक काटता है क्योंकि यह सारा फसाद मसीह के जीवित रहने की आस्था से खड़ा हुआ है। और इस गलत आस्था के कारण पृथ्वी काली हो गयी है। इसके बावजूद तुम (मसीह) के जीवित रहने पर सबूत लाने की शक्ति नहीं रखते तथा लोगों की बातों को ले लेते हो। परन्तु अल्लाह और सरवर–ए–कायनात (सम्पूर्ण ब्रह्मांड के सरदार) के आदेश को स्वीकार नहीं करते। तुम जानते हो कि जिसने क़ुर्आन की तफ्सीर राय के साथ की, यदि वह सही भी हो तो उसने ग़लती की। फिर भी तुम अपने इच्छाओं का अनुकरण करते हो और उस हस्ती से नहीं डरते जिसने सब कुछ पैदा किया है तथा गुस्ताख (धृष्ट) लोगों के समान बातें करते हो। जब तुन्हारे सामने फ़ुर्कान (हमीद) (अर्थात्-क़ुर्आन) की आयतें पढ़ी जाएं

तो तुम उन्हें स्वीकार नहीं करते चाहे आधा क़ुर्आन भी पढ़ दिया जाए और यदि क़ुर्आन के अतिरिक्त जो भी प्रस्तुत किया जाए उसे तुम प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लेते हो।

तुम रहमान ख़ुदा की किताब की ओर ध्यान नहीं देते और उस (क़ुर्आन) के ग़ैर (अतिरिक्त) की ओर ख़ुशी-ख़ुशी लपकते हो। काश मुझे यह ज्ञात होता की जब हमने क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश देख लिए तो इसके बाद क़ुर्आन के अतिरिक्त किसी और चीज़ पर विश्वास करना कैसे उचित हो सकता है क्या क़ुर्आन के अतिरिक्त कोई अन्य चीज़ तुम्हें आज्ञा-पालन एवं विश्वास तक पहुंचा सकती है? यदि तुम सच्चे हो तो कोई प्रमाण लाओ। सैकड़ों अफ़सोस हमारे दुश्मनों पर कि उन्होंने कृपालु ख़ुदा के धर्म ग्रन्थों से अपनी निगाहें फेर ली हैं और इर्फान (अध्यात्म) के अभिलाषियों की भांति उन्होंने क़ुर्आनी मआरिफ की खोज नहीं की और अपना सारा समय तथा अपनी सम्पूर्ण आयु ऐसे कथनों में फ़ना (बरबाद) कर दी जो उन्हें आज्ञा पालन करने के बाग़ों तक नहीं पहुंचा सकते। और न वे उन्हें ईमान के पवित्र झरनों से सींचते हैं और हम उनके कथनों को झूठ गढ़ने वालों की बातों के समान देखते हैं। हे अंधे और काने लोगों के गिरोह! अल्लाह से डरो और पापों तथा दुराचारों पर बहादूरी मत दिखाओ और वह मार्ग अपनाओ जिसमें न अत्याचार करने की आशंका हो और न किसी तलवार की चोट का और न किसी डसने वाले के डंक का और न किसी विशाल घाटी के कष्ट की शंका हो। अल्लाह के समक्ष आज्ञाकारी बन कर खड़े रहो तथा मेरी इस बात पर विचार करो कि जो कुछ मैंने कहा है क्या वह सत्य है या जो कुछ मैंने कहा है उसमें मैं सच्चाई से हट गया हूँ? और विनय करने वालों की भांति सोच-विचार करो। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम प्रमाण स्वीकार करने में तत्परता प्रकट नहीं करते तथा सीधे मार्ग से हट रहे हो। भण्डार इकट्ठा करने में भाग-दौड़ करते हो और उसके लिए निकट संबंधियों को छोड़ रहे हो। और मुझे तुम में कोई ऐसा दिखाई नहीं दे रहा जिसने ख़ुदा के लिए निकट संबंधियों और दोस्तों को छोड़ा हो और धर्म में दौड़-धूप की और स्थायित्व ग्रहण किया। तुम क्यों सदाचारी (नेक) लोगों के आचरण ग्रहण नहीं करते और मुत्तक़ियों (संयमियों) के मार्गों का अनुकरण नहीं करते। तुमने सच्चाई का इन्कार किया और तुमने उसकी सिंचाई को नहीं देखा, न ही उसके कंकड़ो पर चले हो और न तुम ने सम्पूर्ण मामले पर दृष्टि डाली। तुम ने फ़ुर्क़ान (हमीद) और उसकी हिदायत को त्याग दिया है और तुम हद से बढ़ने वाली क़ौम हो।

हे विकार, बैर और शत्रुता रखने वालो! तुम बन्दों के रब्ब ख़ुदा से डरो, तुम्हारा तक्वा (संयम) किधर गया? और तुम्हारे ज्ञान ने तुम्हें गुमराह (पथभ्रष्ट) किया तथा तुम्हें बचाया नहीं। न तुम्हें क़ुर्आन की समझ है और न तुम्हें फ़ुर्क़ान का कुछ ज्ञान है। तुम्हारी विशेषताएं कहां खो गईं और तुम्हारी तरोताज़गी कहां गई? मैं तुम्हारी बातों की बुनियाद संयम पर नहीं पाता (बल्कि) तुम्हारे दिलों को उद्दण्ता से भरा हुआ पाता हूँ। उस नौका का क्या बनेगा जिसके मल्लाह तुम जैसे हों। और उस भूमि का हाल क्या होगा जिस पर तुम्हारे जैसे लोग खेती-बाड़ी करते हों। निस्सन्देह तुम इस्लाम और क़ुरआन0

के शत्रु हो। हम जानते हैं कि इस्लाम का महल तुम्हारे कारण से तथा तुम्हारे हाथों से मिट्टी में मिल गया है। और अब उसके केवल खण्डहर शेष रह गए हैं और यदि मेरे रब्ब की रहमत (दया) न होती तो अंधकार उसे घेर लेते। अल्लाह ही उसका रक्षक है और वही उत्तम रक्षक है। (शेष.....) (पुस्तक: इत्मामुलहुज्जत पृष्ठ 43-48)

सम्पादकीय

अहंकार एक भयंकर रोग

अहंकार (अर्थात घमंड) चाहे वह किसी भी चीज़ का हो एक प्रकार का रोग है जो हमारे मन को दूषित करता है और यह हमारे जीवन को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। अल्लाह तआला फरमाता है- وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا

अनुवाद : और तू ज़मीन में अकड़ कर न चल। तू यक़ीनन ज़मीन को फाड़ नहीं सकता और न अपने क़द में, अपनी ऊंचाई में पहाड़ों की बुलंदी तक पहुंच सकता है। (सूरह बनी इस्राईल आयत-38) यह अहंकार एक ऐसी स्थिति है जिसमें हम अपने आप को दूसरों से अच्छा, सबसे ऊपर और अधिक महत्वपूर्ण समझने लगते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने एक शेर में लिखते हैं :

बद्तर बनो हर एक से अपने खयाल में
शायद इसी से दख्ल हो दारुल विसाल में

अर्थात आप फरमाते हैं कि बजाए अपने आप को सबसे अच्छा ओर बेहतर समझने के, चाहिए कि अपने आप को सबसे बुरा ओर कमज़ोर समझो क्योंकि आजिज़ी विनम्रता खुदा को बहुत पसंद है अहंकार से उसे सख्त नफरत है। शायद इस तरह तुम खुदा के प्यारे बन जाओ और तुम्हें जन्नत नसीब हो जाए।

अपनी एक महान पुस्तक 'आईना कमालात-ए-इस्लाम' में आप लिखते हैं -

"मैं सच-सच कहता हूं कि क़यामत के दिन शिर्क के बाद अहंकार जैसी कोई मुसीबत नहीं यह एक ऐसी मुसीबत है जो मनुष्य को दोनों लोकों में अपमानित करती है। ख़ुदा तआला की दया प्रत्येक एकेश्वरवादी (ख़ुदा को एक मानने वाले) का निवारण करती है परन्तु अहंकार का नहीं। शैतान भी एकेश्वरवादी होने का दम भरता था परन्तु चूंकि उसके सिर में अहंकार था और आदम जो ख़ुदा की दृष्टि में प्रिय था जब उसने उसको अपमान की दृष्टि से देखा और उसकी आलोचना की इसलिए वह मारा गया और सदैव के लिए उस पर लानत डाली गई। अत: पहला पाप जिस से एक व्यक्ति हमेशा के लिए तबाह हुआ अहंकार ही था। अब मैं महाप्रतापी ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूं कि जिसके हाथ में मेरी जान है जो दुराचारी और झूठ गढ़ने वाले को बिना दण्ड के नहीं छोड़ेगा कि ख़ुदा तआला ने जैसे मुझे मसीह इब्ने मरयम ठहराया है ऐसा ही आदम भी ठहराया है और फ़रमाया कि اَرَدْتُّ اَنْ اَسْتَخْلِفَ فَخَلَقْتُ اٰدم अर्थात् मैंने इरादा किया कि संसार में अपना प्रतिनिधि नियुक्त करूं इसलिए मैंने आदम को पैदा किया अर्थात् इस विनीत को। फिर जबकि मैं आदम ठहरा तो मेरे लिए एक आलोचक भी होना चाहिए था जो पहले लोगों की दृष्टि में फरिश्तों के समान हो और फिर इब्लीस का रूप धरण करे। अत: अब मालूम हुआ कि वह आप (मुहम्मद हुसैन बटालवी) ही हैं। और पुन: मैं क़सम खाकर कहता हूं कि यह वाक्य जो मैं ऊपर लिख आया हूं यह महाप्रतापी ख़ुदा का कथन है और यदि यह महा प्रतापी ख़ुदा का कलाम नहीं तो मैं दुआ करता हूं कि ख़ुदा तआला मुझे एक रात की भी छूट न दे और मुझ वह दण्ड दे जो किसी को न दिया हो। हे मेरे ख़ुदा! हे मेरे पथप्रदर्शक! हे

मेरे रहनुमा! यदि यह तेरा कलाम नहीं यदि तू ने ही मुझे ख़लीफ़ा नियुक्त नहीं किया, यदि तूने ही मेरा नाम **ईसा** नहीं रखा और तूने मेरा नाम आदम नहीं रखा तो मुझे जीवितों में से काट डाल। परन्तु यदि मैं तेरी ओर से हूं और तेरा ही हूं तो मेरी सहायता कर जैसा कि तू उनकी सहायता करता है जो तेरी ओर से आते हैं।

अन्तत: मैं इस बात का उल्लेख करने से भी नहीं रह सकता कि बटालवी साहिब का अहंकारियों का सरदार होना केवल मेरा ही विचार नहीं बल्कि मुसलमानों का एक बड़ा गिरोह इस पर गवाही दे रहा है और साथ ही लोग इस बात से भी आश्चर्य चकित हैं कि यह अंहकार किस कारण से और किसी आधार पर है। उदाहरणतया शैतान ने जो अहंकार किया तो उसका यह आधार था कि वह स्वयं को खानदानी शरीफ़ समझता था और خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ (आराफ़-13, अर्थात- तूने मुझे तो अग्नि से पैदा किया है।) का दम मारकर हज़रत सफिउल्लाह (आदमअ.) पर خَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ (आराफ़-13) अर्थात- उसे गीली मिट्टी से पैदा किया है।) की आलोचना करता था तो यदि हज़रत बटालवी साहिब दूसरों की अपेक्षा स्वयं को एक विशेष तौर से खानदानी शरीफ समझते हैं तो इस का कोई सबूत देना चाहिए और कोई एक-आधी गवाही प्रस्तुत करनी चाहिए। और यदि अंहकार का कारण किसी प्रकार का ज्ञान है जो मियां शैख़ुलकुल या किसी और से प्राप्त किया है तो इसका भी सबूत देना चाहिए क्योंकि हमें अब तक इस बात का ज्ञान नहीं कि उनको कौन सा ज्ञान प्राप्त है। क्या वैद्य हैं या फ़िलास्फ़र हैं या खगोल शास्त्री हैं या तर्क शास्त्री या साहित्यकार या क़ुर्आन की वास्तविकताओं और मआरिफ़ में सब से बढ़कर हैं या इमाम बुख़ारी की तरह कई लाख हदीसें कंठस्थ हैं। यदि इन बातों में से कोई बात भी नहीं तो फिर शैतानी अहंकार के अतिरिक्त उनके बारे में और क्या सिद्ध हो सकता। अब याद रहे कि अहंकार के साथ झूठ अनिवार्य पड़ा हुआ है बल्कि अत्यन्त गन्दा झूठ वह है जो अहंकार के साथ मिलकर प्रकट होता है यही कारण है कि अल्लाह तआला अंहकारी का सब से पहले सिर तोड़ता है, इसी प्रकार अब भी तोड़ेगा। यह तो सिद्ध हो चुका है कि मियां बटालवी का यह आचरण है कि अपना तो विशेष तौर पर मौलवी नाम रखा है और दूसरों का नाम जाहिल, मूर्ख और अनपढ़। और जिस पर बड़ी कृपा हुई उसे मुंशी करके पुकारा है, और हमारी जमाअत का नाम जाहिलों और मूर्खों की जमाअत रखा है।

अब मियां बटालवी बताएं कि उन्होंने स्वयं को मौलवी ठहराने और दूसरों का नाम मूर्ख और अनपढ़ रखने में सच बोला है या झूठ। मैं सच-सच कहता हूं जो मैं देखता हूं कि मियां बटालवी की ज़ड़ों में झूठ रचा हुआ है और अहंकार की गन्दी प्रकृति ने इस झूठ को और भी ज़हरीला माद्द: (तत्व) बना दिया है। चूंकि शैतानी अहंकार ने उन पर अपना पूरा-पूरा बोझ डाल दिया है इसलिए एक ज़ोर के साथ झूठ की गन्दगी उनके मुंह से बह रही है। फिर इसके साथ निर्लज्जता यह कि दूसरों का नाम झूठा रखते हैं।"

(आईना कमालात-ए-इस्लाम 542-546)

अत: हर इंसान को अहंकार से बचना चाहिए सबको अपने समान समझना चाहिए अगर खुदा ने आपको दूसरों की अपेक्षा कुछ अधिक दिया है तो उसका शुक्र करें और अधिक विनम्र बनें। जिसने दिया है वह वापस भी ले सकता है दुनिया में ऐसी सेंकड़ों मिसालें हैं। धन्यवाद

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 26.7.2024 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

जलसा सालाना के अवसर पर सेवा (खिदमत) करने वालों तथा मेहमानों को स्वर्णिम उपदेश।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला की कृपा से आज जलसा सालाना बर्तानियः शुरु हो रहा है तथा हज़ारों लोग यहाँ दीनी तथा रूहानी वातावरण से लाभान्वित होने के लिए आए हैं। इन दिनों में यहाँ हदीक़तुल मेहदी में एक अस्थाई नगर बनाया गया है ताकि इस माहौल में रह कर, हम दुनिया के झमेलों से अलग होकर अपनी अपनी रूहानी एवं नैतिक स्थितियों को सुन्दर बनाने की चेष्टा करें। अतः ऐसे हालात में आने वालों को किसी भी प्रकार की सुविधा उपलब्ध होने से अधिक इस बात की चिंता होनी चाहिए कि किस तरह हम इस माहौल से अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु इंसान के साथ मानवीय आवश्यकताएँ तथा दुविधाएँ भी लगी हुई हैं इस लिए व्यवस्थापकगण आने वालों को हर सम्भव सुविधा पहुंचाने का प्रयास करते रहते हैं तथा इस उद्देश्य के लिए विभिन्न विभाग जलसा सालान के दिनों में स्थापित किए जाते हैं। हज़ारों कार्यकर्ता स्वयं सेवा की भावना से अपनी सेवाएँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए पेश करते हैं।

इस सम्बंध में पहले तो मैं समस्त कारकुनों को इस ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि वे अपनी ड्यूटियाँ बेहतर रंग में अन्जाम देने की कोशिश करें। जलसे के मेहमानों को हज़रत मसीह मौऊद अलै. के मेहमान समझ कर सेवा करें। मेहमान की ओर से, आपके विचार में, यदि कोई ऊँच नीच भी हो जाती है तो उसको अनदेखा करें। अल्लाह तआला की कृपा से हर देश में मेहमान नवाज़ी तथा उच्च शिष्टाचार का प्रदर्शन जमाअते अहमदिया का एक विशिष्ट निशान बन चुका है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि मेहमान का दिल तो शीशे के समान होता है, भावुक होते हैं, उनका ध्यान रखना चाहिए। यहाँ आने वाले अधिकांश अहमदी तो यह बात भली भांति समझ कर आते हैं कि कठिनाइयाँ एवं असुविधाएँ सहन करनी पड़ेंगी। कुछ मेहमान जो अभी जमाअत में शामिल नहीं हुए उनका हर हाल में विशेष ध्यान रखना पड़ता है। सब विभागों को चाहे ट्रैफ़िक है, पर्किगं की ड्यूटी है, खाना खिलाने वाले हैं अथवा अनुसाशन, सुरक्षा, सफ़ाई, पानी की सप्लाई इत्यादि मतलब यह कि किसी भी विभाग की ड्यूटी हो, कोशिश करें कि यथासम्भव मेहमान के लिए सुविधा उपलब्ध कराई जाए तथा उसको किसी भी प्रकार का कष्ट न पहुंचे।

मेहमानों को मैं कहना चाहता हूँ कि आप लोग एक नेक उद्देश्य के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमान बन कर यहाँ आए हैं। सांसारिक प्रतिष्ठा तथा सेवा के बजाए उस उच्च नैतिक शिष्टाचार का विकास अपने सम्मुख रखें जो एक वास्तविक मुसलमान की विशेषता है। ख़ुदा के लिए यात्रा करने वालों का सांसारिक सुविधाओं की ओर कम ध्यान होता है। कई बार व्यवस्था में झोल दिखाई देता है परन्तु उसको अनदेखा करना चाहिए। यदि हर एक आने वाले अहमदी मुसलमान के दिल में यह भावना हो कि हमारा उद्देश्य रूहानी मायदा (दस्तरख़्वान) प्राप्त करना है तो मेज़बान एवं मेहमान दोनों मुहब्बत और प्यार के साथ ये दिन व्यतीत करेंगे।

प्रबन्धकों का प्रयास यही होता है कि आने वाले समस्त मेहमानों के साथ एक जैसा व्यवहार किया जाए किन्तु फिर भी कई बार चूक हो जाती है तो इसे मेहमानों को अनदेखा करना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेहमानों का अति मान सम्मान किया करते थे किन्तु मेहमानों को यह भी फ़रमाया करते थे कि अपनी आवश्यकता बिना संकोच के बयान कर दिया करो, किन्तु यह सामान्य स्थिति की बात है। जलसे के मेहमानों को आप अलै. फ़रमाया करते कि एक ही व्यवस्था हो, हर मेहमान का उसी प्रकार स्वागत किया जाए जो एक व्यवस्था के अंतर्गत है।

आप अलै. मेहमानों के दिल में यह बात बिठाते थे कि तुम्हारे यहाँ आने का मूल उद्देश्य दीन सीखना तथा अपने मन एवं आत्मा को स्वच्छ एवं पवित्र करना और अल्लाह तआला की निकटता के मार्गों में आगे बढ़ने का प्रयास करना है। अतएव यही मूल उद्देश्य है जिसके लिए आप सब हर साल यहाँ एकत्र होते हैं। जलसागाह में बैठ कर जलसे के प्रोग्राम तथा सम्बोधनों को ध्यान पूर्वक सुनें तथा उनसे लाभान्वित होने का प्रयास करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से वह जमाअत प्रदान की है जिसने देशों एवं राष्ट्रों की सीमाओं एवं सम्प्रदायों को समाप्त कर दिया है तथा एक महान बन्धुत्व की आधार शिला पड़ चुकी है। आप अलै. ने जलसे का एक यह भी उद्देश्य बयान फ़रमाया है कि जमाअत के बन्धुत्व के सम्बंध सुदृढ़ हों, इसके लिए स्वभाविक है कि दूसरों से मेल जोल भी होता है किन्तु मोमिन के लिए अपने समय का व्यापक उपयोग अत्यंत आवश्यक है इस लिए जलसे के पूरे दिन के प्रोग्रामों के बाद जो भी अवसर मिले, उसमें फिर आपस में मिल बैठें और बातें करें तथा

सम्बंध बढ़ाएँ, परन्तु उसमें इतने व्यस्त न हों कि समय नष्ट हो।

जब इतनी बड़ी संख्या में लोग जमा हों तो कई बार कुछ ग़लतियाँ भी हो जाती हैं। याद रखें, कि वास्तविक मोमिन क्रोध को दबाने वाले होते हैं। अतएव जलसे की पवित्रता को सामने रखें तथा एक दूसरे की ग़लतियों को अनदेखा करें। यदि किसी कार्य-कर्ता से कोई ग़लती हो भी जाए तो भी बुरा मानने के बजाए धैर्य दिखाना चाहिए तथा साहस के साथ क्षमा कर देना चाहिए। यदि विकसित साहस पैदा हो जाए तो समस्त झगड़े एवं कटुताएँ समाप्त हो जाएँ। अत: मेहमानों तथा ड्यूटी देने वालों, दोनों को कहता हूँ कि उनका कत्तव्य है कि विशाल हृदय दिखाएँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छानुसार कोशिश यह करनी चाहिए कि परस्पर मुहब्बत एवं बन्धुत्व का उदाहरण बन जाएँ तथा यही अल्लाह तआला ने मोमिनों के बारे में फ़रमाया है। अतएव छोटी छोटी बातों पर उलझने के बजाए कोशिश यह करें कि अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने की हमने कोशिश करनी है, जो रुकूअ, सजदों तथा अल्लाह की स्तुति से प्राप्त होता है। हर मेहमान जो यहाँ आया है, अपनी यात्रा को केवल अल्लाह के लिए शुद्ध करने की कोशि करे। कारकुन तथा मेहमान सब याद रखें कि कुछ ग़ैर अज़-जमाअत तथा ग़ैर मुस्लिम भी यहाँ आए होते हैं, यदि उच्च नैतिक आचरण का प्रदर्शन कर रहे होंगे तो यह गुप्त तबलीग़ होगी तथा इसका ग़ैरों पर अति सुन्दर प्रभाव पड़ता है तथा उनका इस्लाम की ओर ध्यान आर्षित होता है तथा वे इस्लाम की विशेषताओं से प्रभावित होते हैं।

एक आवश्यक चीज़ यह है कि यहाँ आने वाले एक दूसरे को सलाम करने को भी रिवाज दें, अधिकाधिक इसका प्रयास करें। बड़ी बरकत वाली तथा पवित्र दुआ हमें सिखाई गई है। जब मेज़बान तथा मेहमान एक दूसरे को सलाम करते हैं तो जहाँ वे हर एक प्रकार के भय एवं चिंता से मुक्त होते हैं वहाँ यह दुआ एक दूसरे को लाभान्वित करने वाली भी होती है। अत: इस बात की ओर इन दिनों में अधिक ध्यान दें ताकि हम हर ओर सलामती, प्यार तथ मुहब्बत फैलाने वाले बन जाएँ तथा यह माहौल शुद्ध रूप में केवल अल्लाह के लिए बन्धुत्व का वातावरण बन जाए। हमें कोशिश करनी चाहिए कि हर प्रकार के स्वार्थ से अपने आपको पाक करें। इन दिनों में एक इंक़लाब अपने जीवन में पैदा करने का प्रयास करें। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सलाम को रिवाज दें तथा इसके लिए तुम चाहे किसी को जानते हो या नहीं, उसे सलाम करो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक वृत्तांत आपको बताता हूँ। मुसलमानों तथा ईसाईयों में जंग-ए-मुक़द्दस में एक वाद विवाद का आयोजन था और जिस स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलै. ठहरे हुए थे, वहाँ मेहमान की अधिक संख्या के कारण आयोजक आप अलै. के लिए खाना रखना भूल गए। रात का एक भाग व्यतीत हो गया तथा बड़ी प्रतीक्षा के बाद जब आप अलै. ने खाने के बारे में पूछा तो सब आयोजक बड़े परेशान हो गए कि बहुत देर हो चुकी है, खाना भी रखा हुआ नहीं है तथा बाज़ार भी बन्द हो चुके हैं। यह स्थिति जब हज़रत मसीह मौऊद अलै. को

पता चली तो आप अलै. ने फ़रमाया कि इस तरह तकलीफ़ तथा घबराहट की क्या ज़रूरत थी? दस्तरख़्वान (खाना खाने का कपड़ा) पर देखो, जो बचा हुआ खाना है, वही ले आओ। जब वहाँ देखा गया तो रोटियों के कुछ टुकड़ों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था, सबज़ी इत्यादि भी नहीं थी। आप अलै. ने फ़रमाया- हमारे लिए यही काफ़ी है और आप अलै. ने वही खा लिया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सबसे बड़े आशिक़ और आप स. की सुन्नत के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाले हज़रत मसीह मौऊद अलै. का यह नमूना था। अतएव हमें भी, जो आप अलै. की जमाअत में शामिल होने का दावा करते हैं, यह धैर्य, साहस, आभार तथा भावनाएँ हर समय दिखाने की आवश्यकता है।

मैं इस बात की ओर भी ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि इन दिनों में विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनियाँ लगी हुई हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के यूरोप के दौरे को एक सौ साल पूरे हो रहे हैं इस लिए यू.के. की जमाअत ने मर्कज़ी आर्काईव्ज़ के साथ मिल कर विभिन्न चित्रों की एक प्रदर्शनी लगाई है, उसको अवश्य देखें। इसी तरह अन्य नुमाईशें हैं जो देखने वाली हैं, अवकाश में समय को नष्ट करने के बजाए इन प्रदर्शनकारियों को देखने की चेष्टा करें।

इन दिनों में सुरक्षा की ओर विशेष ध्यान दें, सबसे बढ़ कर हमारी सुरक्षा यही है कि अपने दाएँ बाएँ नज़र रखें, परन्तु सबसे बड़ा हथियार हमारे पास अल्लाह तआला की शरण है तथा इस शरण को प्राप्त करने के लिए विशेषत: इन तीन दिनों में दुआओं तथा अल्लाह की स्तुति की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। अल्लाह तआला आप सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि इस पर अमल करने वाले हों तथा यह जलसा हर एक के लिए बरकत वाला हो।

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

☆ ☆ ☆

Asifbhai Mansoori 9998926311

Sabbirbhai 9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

LIYAKAT ALI

Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की
मृत्यु और जीवन की आस्था का महत्व
(लेखक- हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए रज़िअल्लाहु अन्हो)

मसीह अलैहिस्सलाम के जीवित रहने की आस्था मुसलमानों के अन्दर किस प्रकार प्रविष्ट हुई?

पाठकों को ज्ञात होगा कि जब इस्लाम की विजयों का युग था उस समय ईसाई लोग समूह के समूह इस्लाम में सम्मिलित हुए और यह एक स्वाभाविक बात है कि मनुष्य अपने पुराने विचारों का शनै: शनै: त्याग करता है। हमारे देश में कहावत प्रसिद्ध है कि राम का नाम निकलते-निकलते ही निकलेगा और अल्लाह का नाम प्रवेश होते-होते ही होगा। इसी पर अनुमान कर लो कि ये लोग जो हज़ारों लाखों की संख्या में समूह के समूह इस्लाम में शामिल होते थे। वे यद्यपि इस्लाम की सच्चाई को स्वीकार करके ही मुसलमान होते थे, परन्तु विचारों में पूर्णतया क्रान्ति न होने के कारण वे विवरण योग्य बातों में स्वाभाविक तौर पर कुछ ईसाई विचारधारा अपने साथ लाते थे, जिनका एक दिन में हृदय से निकल जाना सम्भव न होता था। उन लोगों के हृदयों से मसीह नासिरी का अनुचित प्रेम द्वैतवाद के स्थान से तो नि:सन्देह नीचे गिर गया था, परन्तु अभी पूर्णरूप से हृदय से नहीं निकला था, इसलिए क़ुर्आन शरीफ़ और हदीसों में जहां कहीं मसीह अलैहिस्सलाम की चर्चा आती है वहां स्वाभाविक तौर पर उन लोगों ने कुछ हाशिए चढ़ाए और मुसलमान आहिस्ता-आहिस्ता ग़ैर महसूस ढंग से उनके विचारों से प्रभावित होते चले गए। जब तक सहाबा रज़ि. का एक बड़ा समूह जीवित रहा उस समय तक तो ऐसा प्रभाव बिल्कुल सम्भव न था, परन्तु सहाबा रज़ि. के युग के पश्चात् स्वयं वंशानुगत मुसलमान भी एक सीमा तक उन नए मुसलमानों के प्रभाव के अधीन हो गए और इस प्रकार शनै: शनै: कुछ ग़लत आस्थाएं मुसलमानों के अन्दर प्रचलित हो गईं। भला आप विचार करें कि क़ुर्आन शरीफ़ में मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम के बारे में आता है कि उसने मुर्दे जीवित किए उसके स्पष्ट तौर पर ये अर्थ थे कि वे लोग जो आध्यात्मिक तौर पर मुर्दा थे उनके अन्दर उसने जीवन की आत्मा फूंकी जैसा कि समस्त नबियों का काम है। स्वयं मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) के संबंध में ये शब्द आते हैं कि हे लोगो! जब तुम्हें ख़ुदा का रसूल जीवित करने के लिए बुलाए तो उसकी बात पर उपस्थित हूँ कहा करो, परन्तु इसके बावजूद मसीह के लिए जब-जब जीवित करने के शब्द आए तो वहां इन लोगों ने वास्तविक मुर्दों को जीवित करना समझ लिया। इसी प्रकार क़ुर्आन में जहां कहीं मसीह के बारे में 'ख़लक' का शब्द आ गया तो उसे नऊज़ुबिल्लाह वास्तविक तौर पर स्रष्टा ही मान लिया गया, हालांकि ऐसे शब्द बतौर रूपक के होते हैं। यही हाल इस मामले में हुआ। ईसाई धर्म में पहले से ही मसीह के दोबारा आगमन की ख़बर मौजूद थी, जिसे समस्त ईसाई लोग स्वयं मसीह का पुनरागमन समझते थे। जब ये लोग समूह के समूह मुसलमान होकर इस्लाम में सम्मिलित हुए तो उन्होंने इस्लाम में भी मसीह के आने की ख़बर सुनी जिससे उन्होंने तुरन्त यह सोच लिया कि यह वही ख़बर है जो ईसाइयत में भी मौजूद है कि मसीह दोबारा आएगा, आगे अरबी मुहावरे के अनुसार 'नुज़ूल' (उतरना) का शब्द भी मिल गया अत: फिर क्या था इस विचार पर सुदृढ़ रूप में जम गए कि इस्राईली मसीह स्वयं अन्तिम युग में उतरेंगे। मसीह के प्रेम

ने इस बात की आज्ञा ही नहीं दी कि क़ुर्आन खोल कर विचार करें कि यह आस्था क़ुर्आन के अनुकूल है भी या नहीं। बाद में जो लोग आए उनमें इतना साहस कहां कि पूर्वकालीन बुज़ुर्गों के विरुद्ध कोई शब्द मुख पर लाएं, अन्धाधुन्ध इस आस्था पर दृढ़ रहने का उपदेश देते आए, केवल कोई-कोई ऐसे साहसी निकले जिन्होंने इस मिथ्या आस्था के विरुद्ध साहस करके क़ुर्आन और सही हदीसों पर गहरी दृष्टि डाली तो देखा कि मामला तो कुछ और है, जन सामान्य के विरोध की शक्ति हुई तो घोषणा करते हुए कहा कि ईसा की मृत्यु हो चुकी है वरन् अपनी खोज को सीने में ही दबाए हुए इस संसार से कूच कर गए। कठिनाई यह है कि पूर्वजों की आस्थाओं का परित्याग जनता के लिए नितान्त कठिन होता है। क़ुर्आन खोल कर देखो प्रारम्भ से ही जनता की यह आवाज़ रही है कि :

بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا

अर्थात् "हम तो इसी बात पर ही दृढ़ रहेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादाओं को पाया।"

परन्तु ख़ुदा ने भी अच्छा उत्तर दिया कि -

اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۝

हमारा भी यही उत्तर है, परन्तु न सुनने वालों ने ख़ुदा की नहीं सुनी तो हम किस गिनती में हैं!

ईसा इब्ने मरयम का नाम प्रयोग करने में नीति

यह लेख अपूर्ण रहेगा यदि मैं अन्त में वह कारण न बताऊँ जिसके आधार पर नबी करीम (स.अ.व.) ने आने वाले को मसीह इब्ने मरयम के नाम से याद किया। इस बात को भली-भांति समझ लेना चाहिए कि भविष्य में अवतरित होने वाले नबियों के नाम जो किसी नबी के द्वारा बताए जाते हैं वे सामान्य तौर पर किसी आन्तरिक वास्तविकता की ओर संकेत करने वाले होते हैं, इसलिए उन्हें प्रत्यक्ष पर चरितार्थ करना उचित नहीं होता। सामान्यतया उनका आशय यह होता है कि वे आने वाले और उस नाम के मध्य किसी गहरी विशेषता के संबंध को प्रकट करें। उदाहरणतया बनी इस्राईल को यह वादा दिया गया था कि मसीह के प्रकट से पूर्व इल्यास अलैहिस्सलाम अर्थात् 'एलिया' नबी दोबारा उतरेंगे (मलाकी बाब 14, आयत 5) जिन के बारे में यहूदियों की यह आस्था थी कि वह आकाश की ओर उठाए गए हैं (सलातीन बाब-2, आयत-11) इन परिस्थितियों में प्रत्यक्ष पर दृष्टि रखने वाले यहूदियों ने एलिया नबी के नुज़ूल (उतरने) से यह समझा कि वह एलिया जो पहले गुज़र चुका वही स्वयं उतरेगा, तत्पश्चात् मूसा के सिलसिले का मसीह अलैहिस्सलाम आएगा। इसलिए जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने मसीह होने का दावा किया तो यहूदियों ने स्पष्ट तौर पर इन्कार कर दिया और कहा कि हमारी किताबों में तो लिखा है कि मसीह से पूर्व एलिया नबी आकाश से उतरेगा, परन्तु चूंकि अभी तक एलिया नहीं आया इसलिए ईसा अलैहिस्सलाम का दावा सच्चा नहीं हो सकता। इसका उत्तर ईसा अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा के नियमानुसार यह दिया कि एलिया की जो भविष्यवाणी की गई थी उससे स्वयं एलिया का आना अभिप्राय नहीं था अपितु वह रूपक के तौर पर ऐसे नबी की सूचना थी जो एलिया की पद्धति (रंग-रूप) पर आएगा और वह आ चुका है और वही यह्या अलैहिस्सलाम हैं जिसकी आँखें हों देखे (मती बाब 11, आयत 13,14) लेकिन प्रत्यक्ष के पुजारी यहूदी इसी बात पर जमे रहे कि स्वयं एलिया का दोबारा उतरना लिखा है इसलिए यह्या का

आना उसका आना नहीं हो सकता और इस प्रकार वे मुक्ति से वंचित हो गए। इस उदाहरण से यह बात सूर्य से भी अधिक प्रकाशमान हो जाती है कि भविष्यवाणियों में भविष्य में आने वाले सुधारकों के जो नाम बताए जाते हैं उन्हें हमेशा प्रत्यक्ष पर चरितार्थ करना सरासर विनाश का मार्ग है जिससे हर मोमिन को बचना चाहिए। देखिए कहां एलिया नबी का आगमन और कहां यह्या का? परन्तु मसीह यह्या को ही एलिया बता रहे हैं क्योंकि वह एलिया के रंग-रूप पर और उसकी विशेषताओं के साथ प्रकट हुआ था। इसी प्रकार क़ुर्आन करीम में लिखा है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने एक रसूल के आगमन की सूचना दी थी, जिसका नाम अहमद होगा। अब हमारे समस्त विरोधियों की इस बात पर सहमति है कि यह भविष्यवाणी नबी करीम (स.अ.व.)के आगमन से पूरी हो चुकी है, परन्तु क्या नबी करीम का नाम अहमद था? यह ठीक है कि नबी करीम (स.अ.व.) ने नुबुव्वत के दावे के पश्चात् यह फ़रमाया कि मैं अहमद अलैहिस्सलाम भी हूँ, परन्तु दावे के बाद इस नाम को अपनी ओर सम्बद्ध करना विरोधी पर किसी प्रकार सबूत नहीं हो सकता। विरोधी पर तो तब ही सबूत हो जब कि यह सिद्ध किया जाए कि आप के बुज़ुर्गों की ओर से आप का यह नाम रखा गया था, या यह कि दावे से पूर्व आप कभी इस नाम से पुकारे गए परन्तु सही हदीसों से यह कदापि सिद्ध नहीं, इसलिए इस के अतिरिक्त इस का और क्या उत्तर हो सकता है कि आकाश पर आप का नाम अहमद (स.अ.व.) था जिस प्रकार कि आकाश पर यह्या का नाम एलिया था।

इन दो उदाहरणों से भली-भांति यह स्पष्ट हो जाता है कि भविष्यवाणियों में जो नाम बताए जाते हैं वे अनिवार्य तौर पर प्रत्यक्ष में पाए जाने आवश्यक नहीं होते अपितु प्राय: वे किसी काल्पनिक वास्तविकता की ओर संकेत करने वाले होते हैं। अब प्रश्न पैदा होता है कि आने वाले सुधारक के बारे में मसीह इब्ने मरयम इत्यादि नाम प्रयोग करने में कौन सी गुप्त नीति है? इसके उत्तर में कई बातें प्रस्तुत की जा सकती हैं, परन्तु यहां सब का उल्लेख करना विस्तार का कारण होगा, इसलिए कुछ मोटी-मोटी नीतियों के वर्णन करने को ही पर्याप्त समझता हूँ। प्रथम यह कि आने वाला मसीह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के रंग-रूप और गुणों पर आना था, जिस प्रकार एलिया नबी के रंग-रूप और गुणों पर यह्या नबी आया। हज़रत ईसा मैत्री और शान्ति के दूत थे उन्होंने जीवन पर्यन्त विनम्रतापूर्वक मैत्री और नर्मी के साथ अपनी रिसालत का प्रचार किया और यदि विरोधियों ने कभी कठोरता भी की तो उन्होंने धैर्य से काम लिया तथा मुकाबला नहीं किया, इसी प्रकार उम्मते मुहम्मदिया (स.अ.व.) के मसीह मौऊद ने आना था जैसा कि स्वयं नबी करीम (स.अ.व.) ने मसीह मौऊद के बारे में फ़रमाया है कि يَضَعُ الْحَرْبَ (बुख़ारी किताबुल अंबिया) अर्थात् जब मसीह मौऊद प्रकट होगा तो वह तलवार के जिहाद को स्थगित कर देगा क्योंकि वह तलवार द्वारा जिहाद का युग नहीं होगा।

द्वितीय - नीति इसमें यह थी कि जिस प्रकार मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम मूसा के सिलसिले का अन्तिम ख़लीफ़ा था इसी प्रकार यह प्रकट करना अभीष्ट था कि आने वाला मसीह नबी करीम (स.अ.व.) का अन्तिम ख़लीफ़ा होगा और ख़ातुमुलख़ुलफ़ा कहलाएगा, परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि यहां अन्तिम ख़लीफ़ा से अन्तिम स्थायी ख़लीफ़ा अभिप्राय है न कि बिल्कुल हर प्रकार का ख़लीफ़ा अर्थात् अभिप्राय यह है कि मसीह मौऊद स्वयं तो नबी करीम (स.अ.व.) का स्थायी ख़लीफ़ा होगा परन्तु मसीह मौऊद के पश्चात् जो ख़लीफ़े होंगे वे

वास्तव में मसीह मौऊद के ख़लीफ़े होंगे और उसके माध्यम से नबी करीम (स.अ.व.) के भी ख़लीफ़े कहलाएंगे, क्योंकि मुहम्मदी सिलसिला प्रलय तक चलेगा।

तृतीय - और बड़ा कारण यह है कि क़ुर्आन करीम तथा सही हदीसों से विदित होता है कि अन्तिम दिनों में ईसाइयत बहुत ज़ोर पकड़ेगी और ईसाई धर्म बड़े प्रभुत्व की अवस्था में होगा, इसलिए आने वाले सुधारक का एक बड़ा काम यह भी निर्धारित किया गया कि يَكْسِرُ الصَّلِيْبَ अर्थात् मसीह मौऊद सलीबी धर्म के ज़ोर को तोड़ देगा। इस में नीति यह है कि जब किसी नबी की उम्मत में ख़राबी फैल जाती है तो फिर आध्यात्मिक तौर पर उस नबी का ही यह कर्तव्य होता है कि वह उस ख़राबी को दूर करे। जिस प्रकार यदि किसी शासन में ख़राबी हो तो बाहर के शासनों का कर्तव्य नहीं होता कि उस ख़राबी को दूर करें अपितु स्वयं उसी शासन का यह कर्तव्य होता है। अब एक ओर तो अन्तिम युग के लिए प्रारब्ध था कि वह सम्पूर्ण विश्व के उपद्रव का युग होगा और समस्त उम्मतों में उपद्रव फैल जाएगा। ऐसे समय के लिए आवश्यकता थी कि समस्त उम्मतों के प्रवर्तकों के मसील (समरूप) प्रकट होते जो उन के समरूप बन कर सुधार-कार्य करते परन्तु दूसरी ओर इस्लाम के आगमन और ख़ातमुन्नबिय्यीन के प्रकटन ने समस्त आध्यात्मिक पानी अपने अन्दर खींच लिया है और अब कोई सुधारक इस्लाम के बाहर किसी अन्य उम्मत में प्रकट नहीं हो सकता। इसलिए समस्त नबियों का प्रतिबिम्ब (बुरूज़) एक ही अस्तित्व में इस्लाम में पैदा किया जाना आवश्यक था। इस आने वाले सुधारक का काम यह रखा गया कि समस्त उम्मतों का सुधार करे। इस प्रकार उस कथित सुधारक का कार्य दो भागों में विभाजित हो गया। एक स्वयं उम्मते मुहम्मदिया का सुधार, दूसरे शेष उम्मतों का सुधार, परन्तु चूंकि शेष उम्मतों के सुधार-कार्य में सब से प्रमुख कार्य हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की उम्मत का सुधार था, जैसा कि हदीस के शब्द '**यक्सिरुस्सलीब**' से स्पष्ट है। इसलिए इस दृष्टि से आने वाले को विशेष तौर पर ईसा इब्ने मरयम का सम्बोधन दिया गया तथा अन्य उम्मतों के सुधार की दृष्टि से केवल संक्षेप में (मुरसलात रुकू-1) के शब्द प्रयोग किए गए। अर्थात् "अन्तिम युग में समस्त रसूलों के बुरूज़ (प्रतिबिम्ब) एकत्र किए जाएंगे।" इसके मुकाबले में उम्मते मुहम्मदिया के सुधार का काम भी एक विशेष काम था। अत: इस दृष्टि से आने वाले का नाम महदी रखा गया जो नबी करीम (स.अ.व.) के इस आदेश के अनुसार था कि اَلْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ اَلْمَهْدِيِّيْنَ। अर्थात् "मेरे ख़लीफ़े सदमार्ग पर चलने वाले महदी होंगे।" स्पष्ट है कि कथित इमाम ने मुसलमानों को सुधारने के कार्य में नबी करीम (स.अ.व.) का सब से बड़ा ख़लीफ़ा होना था[1]*। ईसा अलैहिस्सलाम इब्ने

1*हाशिया :- हमने लिखा है कि महदी और मसीह एक ही व्यक्ति के दौ नाम हैं। इस पर पाठकों में स्वाभाविक तौर पर यह विचार पैदा होगा कि हम तो इन दोनो को दो भिन्न-भिन्न अस्तित्व सुनते और समझते चले आए हैं ये एक किस प्रकार के हो सकते हैं। अत: इसके उत्तर में स्मरण रखना चाहिए कि अन्तिम युग के कथित आने वाले को कदो विभिन्न रूपों के कारण ये दो विभिन्न व्यक्ति प्रकट होंगे परन्तु सामान्य मुसलमानों ने ग़लती से यह समझ लिया कि एक ही समय में सुधारकों के प्रकटन की सूचना दी गई हैनबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने तो इस विचार से कि मुसलमान महदी और मसही को पृथक-पृथक न समझने लग जाएं यहां तक सावधानी की थी कि फ़र्माया .....(इब्ने माजा व हाकिम) अर्थात "ईसा के समय में ईसा के अतिरिक्त कोई अन्य कथित महदी नहीं होगा" परन्तु खेद कि हमारे मुसलमान भाई के बावजूद ठोकर खाने से न बचे।

मरयम के नाम में और भी कुछ नीतियां हैं, परन्तु एक शुद्ध हृदय रखने वाले मनुष्य की सन्तुष्टि के लिए इतना ही पर्याप्त है।

पुस्तक का समापन तथा लेखक की दिल से दुआ

अब में इस लेख को समाप्त करता हूँ और ख़ुदा से दुआ करता हूँ कि वह अपनी कृपा से आदरणीय पाठकों के हृदयों को विशाल करे ताकि वे अपनी ग़लती को स्वीकार करने में हठ से काम न लें अपितु सत्य के प्रकट हो जाने पर उसे स्वीकार कर लेने के लिए तैयार हों। मैं तो जब इस समस्या पर दृष्टि डालता हूँ तो आश्चर्य चकित हो जाता हूँ कि ऐसा तुच्छ मामला मुसलमानों के हृदयों में किस प्रकार घर कर गया परन्तु अब समय है कि ऐसी बातों से इस्लाम का दामन पवित्र किया जाए जो इस्लामी शिक्षा के बिल्कुल विपरीत होने के अतिरिक्त हमारे स्वामी पहलों और बाद में आने वालों के सरदार के अनादर का कारण हो रही हैं। ख़ुदा मुसलमानों की आँखों को खोले ताकि वे देखें कि इन ग़लत और दूषित आस्थाओं ने इस्लाम को कितनी हानि पहुँचाई है। केवल हिन्दुस्तान में ही पिछले कुछ वर्षों में लाखों कलिमा पढ़ने वाले मुसलमान ईसाई हो चुके हैं। मैं समझता हूँ कि इन सब का पाप मौलवियों की गर्दन पर है। ईसाई प्रचारक भोला-भाला रूप बनाकर मुसलमानों के पास जाते हैं तथा बड़ी विनम्रता के साथ कहते हैं कि देखो तुम्हारे नबी तो मर चुके हैं और मदीने में मिट्टी के नीचे दफ़्न हैं परन्तु हमारा मसीह दो हज़ार वर्ष से अब तक न केवल जीवित है अपितु आकाश पर ख़ुदा के पास बैठा है। बताओ कौन श्रेष्ठ हुआ और कौन जीवित नबी सिद्ध हुआ और कौन मुर्दा नबी निकला? मुसलमानों के लिए मसीह की मृत्यु का शब्द तो मुख पर लाना कुफ़्र हुआ। विवश हो कर मुख से यही स्वीकार कर लेते हैं कि इस बात में तो मसीह ही श्रेष्ठ है। तत्पश्चात् पादरी साहिब कहते हैं कि देखो अन्तिम युग में जब मुहम्मद (स.अ.व.) की उम्मत में उपद्रव और पथभ्रष्टता फैलेगी तो उस के सुधार हेतु ख़ुदा हमारे मसीह को आकाश पर से भेजेगा, मालूम होता है कि वह कोई ऐसा उपद्रव होगा कि उस का सुधार (नऊज़ुबिल्लाह) इस्लाम के नबी की आध्यात्मिक शक्ति से ऊपर होगा अन्यथा ख़ुदा ने यदि किसी को जीवित रख कर ही अन्तिम युग में मुहम्मद (स.अ.व.) की उम्मत का सुधार कराना था तो स्वयं मुहम्मद (स.अ.व.) साहिब को जीवित रखा जाता, परन्तु इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए मुहम्मद (स.अ.व.) साहिब के स्थान पर हमारे मसीह को जीवित रखा गया।

यहां तक तो मसीह की श्रेष्ठता स्वीकार कराई जाती है, तत्पश्चात् अग्रिम पग उठाया जाता है। पादरी साहिब नितान्त सादगी से बोलते हैं कि मुहम्मद साहिब से जब उनके विरोधियों ने आकाश पर जाने का चमत्कार मांगा तो उन्होंने स्पष्ट इन्कार कर दिया और कहा मैं तो केवल एक मनुष्य हूँ और मनुष्य का आकाश पर जाना निषेध है, परन्तु देखो तुम भी मानते हो कि मसीह जीवित आकाश पर जा पहुँचा। इन बातों का उत्तर कौन दे? यदि लोग मौलवियों के पास जाएं तो उन के ईमानों की कमज़ोर चट्टानों पर पहले ही से इन बातों से एक भूकम्प आया होता है, इधर-उधर की बातें करके टाल देते हैं। ये बेचारे जब मौलवियों की ओर से सन्तोषजनक उत्तर नहीं पाते तो विवश होकर गिरजे की ओर जाते हैं।

अफ़सोस! वह धर्म जो किसी युग में يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ افواجًا (समूह के समूह ख़ुदा के धर्म में प्रवेश करते थे) का चरितार्थ था आज يَخْرُجُوْنَ مِنْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا (समूह के समूह ख़ुदा के धर्म से बाहर जा रहे हैं) का

तमाशा-स्थल बन रहा है।★ क्या कोई मुसलमान कहलाने वाला मनुष्य है जिसके हृदय में ये बातें दर्द पैदा करें? खेद! बहुत थोड़े हैं जो सही नीयत के साथ इन बातों पर विचार करते हैं अन्यथा मामला तो बिल्कुल साफ़ है, वह जिसके पुनरागमन की प्रतीक्षा की जा रही है वह स्वयं पुकार-पुकार कर अपने पुनरागमन की वास्तविकता वर्णन कर रहा है, क्योंकि एलिया नबी जिसके बारे में विचार था कि मसीह से पूर्व आकाश से उतरेगा उसके पुनरागमन को मसीह ने उस के किसी समरूप का आगमन बताया है। (मती बाब-11, आयत 13-14)

आश्चर्य है कि एक स्पष्ट उदाहरण सामने होने के बावजूद मुसलमान फिर भी इस बारे में ठोकर खा रहे हैं ठीक जिस प्रकार मसीह नासिरी के बारे में कहा गया था कि वह अन्तिम दिनों में उतरेगा। इस से अधिक स्पष्टता के साथ एलिया के बारे में कहा गया था कि वह मसीह से पूर्व उतरेगा, परन्तु आश्चर्य का स्थान है कि एलिया के वादे को तो एक समरूप (मसील) के द्वारा पूर्ण हो चुका मान लिया जाता है परन्तु मसीह के स्वयं उतारे जाने पर हठ है! खेद जिस स्थान पर यहूदियों ने ठोकर खाई उसी स्थान पर मुसलमानों ने भी ठोकर खाई, परन्तु यहूदी ऐसी पकड़ के नीचे नहीं हैं जैसे कि मुसलमान हैं, क्योंकि यहूदियों के सामने कोई पूर्व उदाहरण मौजूद नहीं था परन्तु मुसलमानों के लिए इस प्रकार के वादे का उदाहरण मौजूद है तथा वे देख चुके हैं कि किसी पहले नबी के आगमन से उसके मसील (समरूप) का आना अभिप्राय होता है न कि स्वयं उसी का आना।

आह! सत्य फ़रमाया था नबी करीम (स.अ.व.) ने कि मेरी उम्मत के लोग यहूद के पद चिन्हों पर चलेंगे (बुख़ारी जिल्द प्रथम पृष्ठ-491) अर्थात् जिस प्रकार यहूद ने एक पहले नबी के आगमन के वादे को स्वयं उसी नबी का आगमन समझ लिया था उसी प्रकार मेरी उम्मत के लोग भी करेंगे, परन्तु मुसलमानों ने इस चेतावनी से भी कोई लाभ नहीं उठाया और आने वाले का केवल इस कारण इन्कार कर दिया कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम के आने में न केवल मुहम्मद (स.अ.व.) का ही बड़ा अपमान है अपितु स्वयं मसीह अलैहिस्सलाम का भी अपमान है क्योंकि चाहे मसीह नासिरी पद में नबी करीम (स.अ.व.) से कितना ही छोटा हो फिर भी वह ख़ुदा का एक मनोनीत रसूल था, जिसने नुबुव्वत का पद नबी करीम (स.अ.व.) के अनुसरण के कारण नहीं पाया अपितु उसे यह इनाम स्थायी रूप से सीधा ख़ुदा की ओर से प्राप्त हुआ था। अब उसे दोबारा उतारने के ये अर्थ हैं कि उसे (ख़ुदा की शरण चाहते हैं) उसके स्थायी नुबुव्वत के पद से अपदस्थ कर दिया जाए और केवल एक उम्मती की हैसियत दी जाए, क्योंकि यदि वह दोबारा उतर कर भी स्थायी रूप से नबी ही रहेगा तो यह बात ख़त्मे नुबुव्वत के सरासर विपरीत है ख़ातमुन्नबिय्यीन के पश्चात् कोई ऐसा नबी नहीं आ सकता चाहे नया हो या पुराना जिसने नुबुव्वत का पद स्थायी रूप में नबी करीम (स.अ.व.) के

★ यह इबारत देश-विभाजन से बहुत पूर्व अर्थात् 1917 ई. में लिखी गई थी जब कि देश में मसीही उपद्रव देश में मसीही उपद्रव का ज़ोर था। अब ख़ुदा की कृपा से .....मुसलमानों के हृदयों में राजनैतिक समझ पैद हो जाने के आधार पर इस्लाम के प्रत्यक्ष तौर पर धर्म छोड़ने का दृश्य तो कम दिखाई देता है और कौमी नारे ज़ोर-शोर से लगाए जाते हैं परन्तु वास्तविकता और क्रियात्मक रूप से इस्लाम अब भी वैसा ही कमज़ोर है और संसार में दज्जाली प्रभाव उसी प्रकार ज़ोर दिखा रहा है। सत्य यह है कि देश से अंग्रेज़ तो नि:सन्देह चला गया, परन्तु पाश्चात्य शैली और भौतिकता उसी प्रकार स्थापित है और धर्म की सच्ची भावना दुर्लभ दिखाई देती है

पूर्ण अनुसरण के बिना सीधे तौर पर प्राप्त किया हो। आप (स.अ.व.) के बाद केवल ऐसी नुबुव्वत का द्वार खुला है जिसे ज़िल्ली (प्रतिबिम्ब स्वरूप) नुबुव्वत के नाम से पुकार सकते हैं अर्थात् ऐसी नुबुव्वत जो नबी करीम (स.अ.व.) की नुबुव्वत का प्रतिबिम्ब है न कि स्थायी नुबुव्वत। अत: ऐसी अवस्था में जब कि आयत ख़ातमुन्नबिय्यीन स्थायी नुबुव्वत के द्वार को बड़ी दृढ़ता के साथ बन्द कर रही है तो मसीह नासिरी का उतरना केवल ऐसी अवस्था में ही हो सकता है कि उसे (ख़ुदा की शरण चाहते हैं) स्थायी नुबुव्वत के पद से हटा कर केवल एक उम्मती की हैसियत दी जाए, परन्तु यह बात ख़ुदा के स्पष्ट नियम के विपरीत है जिसे उसने इन शब्दों में वर्णन किया है कि :-

بِاَنَّ اللّٰهَ لَمۡ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعۡمَةً اَنۡعَمَهَا عَلٰى قَوۡمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوۡا مَا بِاَنۡفُسِهِمۡ (अन्फ़ाल -54)

अर्थात् "अल्लाह तआला किसी को कोई इनाम देकर उस से वह इनाम कदापि वापस नहीं लेता जब तक कि वह स्वयं अपनी दशा परिवर्तित न कर ले।"

अत: अब इस नितान्त स्पष्ट आयत के होते हुए यह किस प्रकार स्वीकार कर लिया जाए कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम स्वयं अन्तिम दिनों में उतरेगा क्योंकि उसके उतरने के अर्थ ये हैं कि उस से (नऊज़ुबिल्लाह) अकारण उसकी स्थायी नुबुव्वत का पद छीन लिया जाएगा।

फिर यह भी तो देखना चाहिए कि क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम के बारे में फ़रमाता है:- رَسُوۡلًا اِلٰى بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ (सूरह आले इमरान, रुकू-5)

अर्थात् "मसीह नासिरी बनी इस्राईल की ओर रसूल बना कर भेजा गया था।"

अब यदि वही मसीह अलैहिस्सलाम उतरे तो उसका अवतरण केवल बनी इस्राईल के अतिरिक्त सम्पूर्ण संसार के लिए स्वीकार करना पड़ेगा, परन्तु यह उपरोक्त आयत के सरासर विपरीत है। अत: अब जिस व्यक्ति को क़ुर्आनी आयतों के निरस्त और मिथ्या सिद्ध करने की इच्छा और साहस हो वह नि:सन्देह मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम का प्रतीक्षक रहे, हम तो उस ख़ुदा से डरते हैं जिसने यहूदियों पर ख़ुदा की वाणी में हस्तक्षेप करने के कारण ला'नत की। ख़ुदा साक्षी है कि हमारा हृदय इस बात को देख-देख कर किस प्रकार कुढ़ता है कि मुसलमान एक ऐसी आस्था पर दृढ़ हैं जो ख़ुदा के नियम के विपरीत होने के अतिरिक्त हमारे स्वामी मुहम्मद (स.अ.व.) और मसीह नासिरी दोनों के नितान्त अपमान का कारण है परन्तु समय आता है कि जब हमारे मुसलमान भ्राता अपनी ग़लती को महसूस करेंगे तथा मसीह के आगमन के लिए आकाश की ओर देखने की बजाए अपने पीछे दृष्टि डालेंगे। उस समय मुहम्मदी मसीह अलैहिस्सलाम का यह कथन पूर्ण होगा कि -

इमरोज़ क़ौमे मन न शनासद मक़ामे मन
रोज़े ब गिरिया याद कुनद वक़्ते ख़ुशतरम

अर्थात् "आज मेरी क़ौम ने मेरे ख़ुदा द्वारा दिए गए पद को नहीं पहचाना, परन्तु एक दिन आता है कि वह मेरे बरकत वाले समय को याद करते रोएगी।"

अन्त में हज़रत मिर्ज़ा साहिब के एक लेख पर इस वर्णन का समापन करता हूँ :-

"हे समस्त लोगो सुन रखो कि यह उसकी भविष्यवाणी है जिसने पृथ्वी और आकाश

बनाया। वह अपनी इस जमाअत को समस्त देशों में फैला देगा तथा सबूत और तर्कों की दृष्टि से उनको सब पर प्रभुत्व प्रदान करेगा, वह दिन आते हैं अपितु निकट हैं कि संसार में केवल यही एक धर्म होगा जो सम्मानपूर्वक स्मरण किया जाएगा। ख़ुदा इस धर्म और इस सिलसिले में असीम श्रेणी और स्वभाव से बढ़कर बरकत डालेगा तथा प्रत्येक को जो इसे मिटाने की चिन्ता में है निराश रखेगा और यह प्रभुत्व हमेशा रहेगा यहां तक कि प्रलय आ जाएगी। यदि (लोग) अब मुझ से उपहास करते हैं तो इस उपहास से क्या हानि, क्योंकि कोई नबी नहीं जिस से उपहास नहीं किया गया। अत: आवश्यक था कि मसीह मौऊद से भी उपहास किया जाता, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

يٰحَسۡرَةً عَلَى الۡعِبَادِ مَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ

अत: ख़ुदा तआला की ओर से यह निशानी है कि प्रत्येक नबी से ठट्ठा किया जाता है परन्तु ऐसा मनुष्य जो समस्त लोगों के समक्ष आकाश से उतरे और फ़रिश्ते भी उसके साथ हों उस से कौन ठट्ठा करेगा? अत: इस सबूत से भी बुद्धिमान समझ सकता है कि मसीह मौऊद का आकाश से उतरना मात्र झूठा विचार है। स्मरण रखो कि कोई आकाश से नहीं उतरेगा हमारे समस्त विरोधी जो अब जीवित विद्यमान हैं वे समस्त मरेंगे और कोई उन में से ईसा इब्ने मरयम को आकाश से उतरते हुए नहीं देखेगा और फिर उन की सन्तान जो शेष रहेगी वह भी मरेगी और उन में से भी कोई व्यक्ति ईसा इब्ने मरयम को आकाश से उतरते नहीं देखेगा और फिर सन्तान की सन्तान मरेगी और वह भी मरयम के पुत्र को आकाश से उतरते नहीं देखेगी, तब ख़ुदा उनके हृदयों में व्याकुलता पैदा कर देगा कि युग सलीब के प्रभुत्व का भी गुज़र गया और संसार दूसरे रूप में आ गया, परन्तु मरयम का पुत्र ईसा अलैहिस्सलाम अब तक आकाश से न उतरा। तब मनीषी अचानक इस आस्था से विमुख हो जाएंगे और आज के दिन से अभी तीसरी सदी पूरी नहीं होगी कि ईसा की प्रतीक्षा करने वाले क्या मुसलमान और क्या ईसाई नितान्त निराश और बदगुमान हो कर यह असत्य आस्था त्याग देंगे और संसार में एक ही धर्म होगा और एक ही पेशवा। मैं तो एक बीजारोपण करने आया हूँ। अत: वह बीज मेरे हाथ से बोया गया और अब वह बढ़ेगा और फूलेगा और कोई नहीं जो उसे रोक सके।"

(तज़किरतुश्शहादतैन, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-20, पृष्ठ 66-67)

परिशिष्ट

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब प्रवर्तक जमाअत अहमदिया की जिस शानदार भविष्यवाणी का उपरोक्त इबारतों में उल्लेख किया गया है जिसमें बताया गया है कि इस घोषणा से तीन सौ वर्ष के अन्दर-अन्दर क्या मुसलमान और क्या ईसाई हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम के शारीरिक तौर पर उतरने के संबंध में निराश होकर इस झूठी आस्था को त्याग देंगे और संसार दूसरे रूप में परिवर्तित हो जाएगा, इसके

प्रारम्भिक लक्षण अभी से प्रकट हो रहे हैं। अत: मुसलमानों का एक वर्ग इस विचारधारा की ओर जा रहा है कि किसी मसीह के आकाश से उतरने का विचार ग़लत है। अत: स्वर्गीय विद्वान इक़बाल ने भी अपने निधन से कुछ समय पूर्व अपने एक लेख में इस विचार को प्रकट किया था कि हमारे मौलवियों से भारी ग़लती हुई कि उन्होंने मसीह के उतरने की आस्था को उचित स्वीकार करके जमाअत अहमदिया के साथ बहस का द्वार खोला और इस बहस में पराजय का मुख देखना पड़ा। उन्हें चाहिए था कि सिरे से मसीह के उतरने के ही इन्कारी हो कर अहमदियत का मुकाबला करते और इस प्रकार मसीह के उतरने से इन्कार पर ही इस सारी बहस का अन्त कर देते ताकि किसी व्यक्ति के कथनानुसार "न रहे बांस और न बजे बांसुरी" इस प्रकार के विचारों को निकट के युग में कुछ अन्य मुसलमान लोगों ने भी प्रकट करना आरम्भ कर दिया है। निश्चय ही यह अहमदियत की एक महान् विजय तथा जमाअत अहमदिया के संस्थापक की उपरोक्त भविष्यवाणी के पूर्ण होने के प्रारम्भिक लक्षण हैं जो ख़ुदा की कृपा और दया से इस घोषणा के पचास-साठ वर्ष के अन्दर-अन्दर ही प्रकट होने आरम्भ हो गए हैं। यह सत्य है कि अभी यह वर्ग इस समस्या को अन्य रूप में प्रस्तुत कर रहा है अर्थात् यह कि इस्लाम में किसी मसीह के उतरने या प्रकट होने की भविष्यवाणी ही नहीं पाई जाती और न आंहज़रत (स.अ.व.) के पश्चात् मुसलमानों के लिए किसी आध्यात्मिक सुधारक की आवश्यकता है, परन्तु बुद्धिमान मनुष्य जिसे इस्लामी ग्रन्थों का थोड़ा बहुत अध्ययन है आसानी के साथ समझ सकता है कि यह विचार कि आंहज़रत (स.अ.व.) के पश्चात् किसी आध्यात्मिक सुधारक की आवश्यकता नहीं ख़ुदा तआला की अनादि सुधार व्यवस्था के प्रतिकूल है जो यह है कि संसार में जब भी आस्थाओं और कर्मों का असाधारण विकार फैल जाता है तो ख़ुदा उसे अपने किसी प्रशिक्षण प्राप्त सुधारक द्वारा दूर करता है। आध्यात्मिक सुधारकों का अवतरित होना केवल नवीन शरीअत (धार्मिकविधान) लाने के उद्देश्य से नहीं हुआ करता अपितु स्रष्टा के अस्तित्व पर लोगों के ईमान को ताज़ा करने तथा लोगों के हृदयों का सुधार, आचरण का सुधार तथा मिथ्या विचारों का दमन करने के लिए भी होता है और यह उद्देश्य क़ुर्आन करीम से पूर्ण हो जाने के पश्चात् भी स्थापित रहता है। यही कारण है कि आंहज़रत (स.अ.व.) के पश्चात् मुसलमानों में कई मुजद्दिद आते रहे हैं और यही कारण है कि हज़रत मूसाअ. के पश्चात् भी उनकी शरीअत के अनुसरण में कई आध्यात्मिक सुधारक आते रहे जिन्हें कोई नई शरीअत नहीं दी गई अपितु वे केवल मूसा की शरीअत की सेवा के लिए अवतरित होते थे।

शेष रहा यह विशेष आरोप कि इस्लाम में किसी मसीह के उतरने की भविष्यवाणी नहीं पाई जाती। अत: यह विचार भी स्पष्ट तौर पर मिथ्या है अपितु सत्य यह है कि इस युग में अहमदियत के संबंध में इस विचार का उत्पन्न होना सरासर पराजित स्वभाव के रुझान का परिणाम है, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं अन्यथा कौन मुसलमान नहीं जानता कि हमारे स्वामी (स.अ.व.) ने किस ज़ोर-शोर और किस पुनरावृत्ति के साथ अन्तिम युग में एक मसीह के समरूप की भविष्यवाणी की है। अत: उदाहरण के तौर पर सही बुख़ारी की यही एक हदीस पर्याप्त है जिसमें रसूले करीम (स.अ.व.) फ़रमाते हैं :-

وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ لَیُوْشِکَنَّ اَنْ یَّنْزِلَ فِیْکُمُ ابْنُ مَرْیَمَ حَکَمًا عَدْلًا فَیَکْسِرُ الصَّلِیْبَ وَیَقْتُلُ الْخِنْزِیْرَ وَیَضَعُ الْجِزْیَۃَ (सही बुख़ारी किताब बदउल ख़ल्क़)

अर्थात् "मुझे उस हस्ती की क़सम है जिस के हाथ में मेरे प्राण हैं कि तुम में अवश्य ही मसीह इब्ने मरयम उतरेगा। वह धार्मिक मतभेदों में मध्यस्थ बनकर निर्णय करेगा और उसका निर्णय सत्य और न्यायपूर्ण होगा, वह सलीबी उपद्रव की तीव्रता के युग में प्रकट होगा तथा इस उपद्रव को टुकड़े-टुकड़े कर देगा और उस समय संसार में ख़िन्ज़ीरी अपवित्रताओं का भी ज़ोर होगा और मसीह उन अपवित्रताओं का विनाश करके रख देगा परन्तु ये समस्त कार्य सबूतों, तर्कों और आध्यात्मिक निशानों के माध्यम से होगा क्योंकि वह युग शान्ति का होगा तथा धार्मिक युद्ध और कर उस युग में स्थगित हो जाएगा।"

क्या ऐसी शक्तिशाली भविष्यवाणियों के होते हुए जो आंहज़रत (स.अ.व.) ने ख़ुदा की क़सम खा कर वर्णन की हैं और हदीसों की सामान्य पुस्तकों में ही नहीं अपितु हदीस की चोटी की पुस्तक तक में भी जिनकी ख़ुदा की किताब के पश्चात् सर्वाधिक सही पुस्तकों में गणना की जाती है पाई जाती हैं और क़ुर्आन करीम में भी इस की ओर स्पष्ट संकेत मिलते हैं और समस्त मुसलमान सहाबा रजि. के समय से लेकर इस समय तक उन भविष्यवाणियों पर ईमान लाते चले आए हैं। कोई व्यक्ति मूल रूप से मसीह के उतरने की आस्था से इन्कार कर सकता है? हां मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम का पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर जाना और फिर आकाश से उतरना नि:सन्देह एक मिथ्या आस्था है जिसका क़ुर्आन और हदीस में कोई प्रमाण नहीं मिलता। उचित आस्था यही है कि इन भविष्यवाणियों में एक मसीह के मसील (समरूप) की ख़बर दी गई थी जिसने हज़रत मसीह नासिरी की तरह मुहम्मदी सिलसिले के अन्त में मसीह के रूप पर अवतरित हो कर इस्लाम की सेवा में सेवारत होना था और वह ख़ुदा की कृपा से प्रकट हो चुका है जिसके नेत्र हों देखे।

सारांश यह है कि जो भविष्यवाणी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने की थी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की प्रतीक्षा करने वाले तीन सौ वर्ष के अन्दर-अन्दर इस प्रतीक्षा से निराश होकर मसीह नासिरी के शारीरिक रूप में उतरने की आस्था को त्याग देंगे। इसके लक्षण अभी से आरम्भ हैं और यद्यपि इस समय अपनी पराजय पर पर्दा डालने के लिए केवल एक भाग की प्रतीक्षा की जा रही है, परन्तु वह समय दूर नहीं कि क्या मुसलमान और क्या ईसाई इस बहस के मूल बिन्दु पर आकर यह घोषणा करने पर विवश होंगे कि जिस मसीह के आसमान से आने की प्रतीक्षा की जा रही थी वह समस्त लोकों के सरदार हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन (स.अ.व.) की पवित्र सांसों के उपलक्ष्य इसी पृथ्वी में से प्रकट हो कर इमामोकुम मिन्कुम का वादा पूर्ण कर चुका है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम ने अपने रसूल (स.अ.व.) के प्रेम की ओर संकेत करते हुए क्या ख़ूब फ़रमाया है कि-

آں مسیحا کہ بر افلاک مقامش گویند---لطف کردی کہ ازیں خاک نمایاں کردی

(ऐसा मसीह कि लोग जिसका स्थान आकाश पर बताते हैं उसे मेरे इश्क-ए-रसूल ने धरती से पैदा करके दिखा दिया। अनुवादक)

☆ ☆ ☆

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY:20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

अहमदिया मुस्लिम रिसर्च एसोसिएशन (AMRA) के पहले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर हज़रत अमीरुल मोमिनीन खलीफ़तुल मसीह अलखामीस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का भाषण

14 दिसंबर 2019 ई० मसरूर हॉल, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड, यूके

अनुवादक- इबनुल मेहदी लईक एम ए

اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَالنَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الۡاَلۡبَابِ۔ الَّذِیۡنَ یَذۡکُرُوۡنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّقُعُوۡدًا وَّعَلٰی جُنُوۡبِهِمۡ وَیَتَفَکَّرُوۡنَ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقۡتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبۡحٰنَکَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

पवित्र कुरान की ये आयतें जो मैंने अभी पढ़ी हैं सूरत आल-ए-इमरान की आयत 191 से 192 तक हैं और उनका अनुवाद है:

"निस्सन्देह आसमानों और धरती की उत्पत्ति में और रात और दिन के अदलने-बदलने में बुद्धिमान लोगों के लिए चिह्न हैं। वे लोग जो खड़े हुए भी और बैठे हुए भी और अपनी करवटों के बल लेटे हुए भी अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों और धरती की उत्पत्ति में चिन्तन-मनन करते रहते हैं। (और सहसा कह उठते हैं कि) हे हमारे रब्ब! तू ने कदापि इसे बिना उद्देश्य के पैदा नहीं किया । पवित्र है तू । अत: हमें आग के अज़ाब से बचा ले।"

अल्लाह की कृपा से आज आपको पहला अंतरराष्ट्रीय AMRA सम्मेलन आयोजित करने का अवसर मिल रहा है। मैं आशा और प्रार्थना करता हूं कि यह आयोजन, इसमें शामिल सभी लोगों के लिए उपयोगी और ज्ञान का स्रोत साबित होगा।

पवित्र कुरान की कई आयतों में, जिनमें वे आयतें भी शामिल हैं जिन्हें मैंने अभी पढ़ा है, अल्लाह तआला ने आकाश और पृथ्वी के निर्माण का उल्लेख किया है और हमें अपने जन्म के वास्तविक उद्देश्य पर विचार करने का निर्देश दिया है। इसने हमें अपनी बुद्धि का उपयोग करने, इसके निर्माण पर विचार करने और अनुसंधान और प्रतिबिंब के माध्यम से मानव विकास के लिए नए तरीके और नए विचार खोजने के लिए प्रेरित किया है।

निस्संदेह, इस तथ्य के कारण कि हमें बुद्धि और विवेक का उपहार दिया गया है, अल्लाह तआला ने मनुष्य को 'अशरफ़ुल मख़लूक़ात' (अर्थात सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ और उच्चतम) घोषित किया है। हमें सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता दी गई है। हमें सोचने और समझने की क्षमता दी गई है। मनुष्य सभी प्राणियों में अद्वितीय है। अल्लाह तआला ने मानव जाति को यह ज्ञान दिया है कि उसने जो कुछ भी बनाया है वह हमारे लाभ के लिए है, बशर्ते हम इसका सही तरीके से उपयोग करें। पवित्र कुरान ने ब्रह्मांड और इसकी शुरुआत के बारे में जो काफी जानकारी (insight) दी है और वैज्ञानिक अनुसंधान और ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रेरणा का व्यापक स्रोत है, निश्चित रूप से सभी पवित्र

धर्मग्रंथों में से वह पवित्र कुरान ही है।

इस संबंध में हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम (मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी) ने फरमाया है कि जब विश्वास करने वाले लोग पृथ्वी और आकाश और पूरे ब्रह्मांड की संरचना पर विचार करते हैं, तो उनके दिमाग बहुत स्पष्ट हो जाते हैं, परिणामस्वरूप, वे दृढ़ विश्वास की ओर अग्रसर होते हैं कि 'सर्वशक्तिमान ख़ुदा है' क्योंकि वे अपने चारों ओर उसके संकेत और उसके अस्तित्व के प्रमाण देखते हैं।

इसके विपरीत, दुनियादार और नास्तिक शोधकर्ताओं का ज्ञान बहुत सीमित और संकीर्ण है। जब वे किसी चीज़ का अध्ययन करते हैं, तो वे उसका मूल्यांकन सीमित तरीके से करते हैं। लेकिन एक मुत्तकी इंसान केवल संसार के आयामों, उसके भौतिक स्वरूप की पहचान करने या उसके गुरुत्वाकर्षण की गणना करने से संतुष्ट नहीं होता है और न ही वह सूर्य, चंद्रमा और सितारों के गुणों का निर्धारण करने से संतुष्ट होता है। एक सच्चा मोमिन निरंतर प्रयास और संघर्ष से परीक्षण करेगा। वह प्रकृति के संचालन और हमारे आस-पास की दुनिया के बीच पूर्ण सामंजस्य को समझने की कोशिश करता है। ऐसे सच्चे मोमिन पुरुषों और स्त्रियों में इस भौतिक दुनिया के छिपे हुए गुणों और ऊर्जाओं को पहचानने की एक न समाप्त होने वाली प्यास होगी और जैसे-जैसे वे उसकी महिमा और पूर्णता को देखेंगे, वे अपने निर्माता की ओर आकर्षित होंगे और अल्लाह के अस्तित्व में उनका विश्वास बढ़ता जाएगा।

जब एक बुद्धिमान व्यक्ति आकाश और पृथ्वी, ब्रह्मांड और रात और दिन लगातार क्यों बदल रहे हैं, इस पर ध्यान से विचार करता है, तो परिणामस्वरूप, वह सर्वशक्तिमान ख़ुदा को महसूस करता है और उसकी संपूर्ण रचना की सराहना करता है। जब वह इस प्रकार सर्वशक्तिमान ख़ुदा को देखता है और उसकी महानता को पहचानता है, तो वह और अधिक उत्साह और जुनून के साथ उसकी ओर झुकता है और ब्रह्मांड के रहस्यों को समझने और जानने में उसकी सहायता और कृपा चाहता है। उसका समर्थन और सहायता प्राप्त करने के लिए, वह उसे खड़े होकर, बैठे हुए और करवटों के बल लेटे हुए भी याद करते हैं, जैसा कि पवित्र कुरान की आयतों में वर्णन किया गया है जो मैंने पढ़ा।

जब वे मार्गदर्शन के लिए अल्लाह से दुआ करते हैं, तो वह उनके विचारों को स्पष्ट करता है, उनके दिमाग को प्रबुद्ध करता है और उनके दिमाग में समझ की कमी के कोहरे को साफ करता है। अल्लाह तआला उन्हें ब्रह्मांड और ग्रहों के बारे में समझ देता है और वे निश्चित रूप से पहचानते हैं कि इतनी परिपूर्ण और सटीक प्राकृतिक प्रणाली कभी भी संयोग से या अपने आप नहीं हो सकती लेकिन यह एक महान निर्माता का काम है और एक संकेत है। यह निश्चित रूप से सर्वस्रष्टा के अस्तित्व का प्रमाण है। जिन लोगों के दिमाग खुले और प्रबुद्ध हैं, वे अपने सृष्टिकर्ता के सामने झुकते हैं और उसके क्रोध से बचने के लिए दुआ करते हैं। और वे प्रार्थना करते हैं कि अल्लाह तआला उन्हें सफलता प्रदान करे और उन्हें उसकी रचना के बारे में सटीक बुद्धि और समझ प्रदान करें।

इसी क्रम में हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है कि भौतिकी, खगोल विज्ञान और वैज्ञानिक विज्ञान का लगातार अध्ययन करने से, एक मोमिन का झुकाव हमेशा सर्वशक्तिमान

ख़ुदा की ओर होता है जितना अधिक वह अल्लाह तआला की सृष्टि और दुनिया की रचना के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है उतना ही वह ब्रह्मांड के रहस्यों के कारण अल्लाह की सुंदरता की प्रशंसा करता है। जब कोई मोमिन इस प्रकार का ज्ञान और अंतर्दृष्टि प्राप्त कर लेता है, तो वह मोमिन पुरुष या स्त्री न केवल नवीनतम वैज्ञानिक विकास के संदर्भ में दूसरों का मार्गदर्शन करने में सक्षम होता है, बल्कि वे ऐसे (तर्क) के हथियारों से भी लैस होते हैं, जिसके साथ वे उस अद्वितीय ख़ुदा के अस्तित्व को साबित करते हैं जो सारी सृष्टि का स्रष्टा है।

यही सच्चे मोमिन की निशानी है, यही उनकी सफलता का साधन है और दुनिया में सच्चा सम्मान और आदर का रास्ता है।

प्रोफेसर डॉ. अब्दुस सलाम साहब ने ब्रह्मांड पर चिंतन करते हुए अपना जीवन इसी तरह बिताया और उन्हें जो भी अंतर्दृष्टि मिली, उसका उपयोग उन्होंने सर्वशक्तिमान ख़ुदा के अस्तित्व को साबित करने के लिए किया। इसलिए सभी अहमदी शोधकर्ताओं या शैक्षणिक क्षेत्र के किसी भी अहमदी को किसी भी शोध या अध्ययन से पहले, उसके दौरान और बाद में ख़ुदा के एकेश्वरवाद को ध्यान में रखना चाहिए। उन्हें अपने शोध के माध्यम से सबूत प्रकट करने के लिए दृढ़ होना चाहिए जो संदेहियों और गैर मोमिनों के लिए ख़ुदा के अस्तित्व को साबित कर सकें। वे उन लोगों का खंडन करने में सक्षम होंगे जो दावा करते हैं कि विज्ञान और धर्म में मतभेद है। जब अहमदी इस तरह से शोध करेंगे और हर कदम पर अल्लाह तआला की मदद चाहेंगे तो निश्चित रूप से अल्लाह तआला हर मोड़ पर उनकी मदद करके उनका मार्गदर्शन करेगा।

जैसा कि मैंने पहले कहा, एक सांसारिक व्यक्ति का शोध पूर्णत: सांसारिक दृष्टिकोण से होता है और वह अपनी बुद्धि का उपयोग केवल सांसारिक उन्नति के लिए ही करता है। उनके प्रयासों से वैज्ञानिक प्रगति हो सकती है, लेकिन एक मोमिन के शोध का प्रभाव कहीं अधिक है। उनके शोध से न केवल वैज्ञानिक प्रगति और आधुनिक तकनीक को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि अहमदी मुस्लिम शोधकर्ताओं को अल्लाह सर्वशक्तिमान के अस्तित्व का प्रमाण भी मिलेगा विशेष रूप से विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्र में काम करने वालों को न केवल अपने क्षेत्र में समझ बढ़ाने के इरादे से काम करना चाहिए, बल्कि ख़ुदा के अस्तित्व के प्रमाण खोजने के शाश्वत दृढ़ संकल्प को भी बनाए रखना चाहिए। जैसा कि मैंने कहा, डॉ. अब्दुल सलाम साहब ने इसी तरह से अपना काम किया और परिणामस्वरूप उन्हें बड़ी सफलता मिली।

याद रखें कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि वास्तविक बुद्धिमत्ता और वास्तविक ज्ञान भी वही लोग रखते हैं जो अल्लाह को कभी नहीं भूलते और हमेशा उसे याद करते रहते हैं। इस प्रकार, जहां हमारे वैज्ञानिक और शोधकर्ता अपनी सांसारिक शिक्षा में आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं वहाँ उन्हें अपने ईमान की रक्षा करनी होगी, सर्वशक्तिमान ख़ुदा के अधिकारों को पूरा करना होगा और जो उनका उत्तरदायित्व है कि वह समस्त शक्तियों के मालिक ख़ुदा के अस्तित्व को साबित

करने के लिए और अधिक सबूत तलाश करें उन्हें इस उत्तरदायित्व को निभाना होगा।
जो लोग शैक्षणिक क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उन में और अहमदी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के बीच हमेशा एक स्पष्ट अंतर होना चाहिए और वह अंतर यह होना चाहिए कि एक अहमदी का ज्ञान अर्जन हमेशा धर्मपरायणता पर आधारित होना चाहिए। पवित्र पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है "मोमिन की फिरासत (दूरदर्शिता) से डरो, क्योंकि उसका ज्ञान तक़्वा पर आधारित है। संक्षेप में अल्लाह का प्यार और उसकी महानता हमेशा आपके दिल और दिमाग में दृढ़ता से बनी रहनी चाहिए।" यदि आप शोध करेंगे और अपने काम को आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे तो अल्लाह आपको बड़ी सफलता प्रदान करेगा। इन्शाअल्लाह

आप में से कुछ लोग जानते होंगे कि एक बार एक प्रसिद्ध पश्चिमी शोधकर्ता और यात्री, प्रोफेसर क्लेमेंट रैग (Professor Clement Wragge) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मिलने के लिए क़ादियान गए थे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि अल्लाह ने सूर्य और चंद्रमा, सितारों और ग्रहों को मनुष्य की सेवा और मानव जाति के लाभ के लिए बनाया है।

इस कथन के आलोक में, एक अहमदी शोधकर्ता जब भी किसी अनसुलझे प्रश्न के उत्तर के लिए शोध कर रहा हो तो उसे हमेशा यह ध्यान में रखना चाहिए कि अल्लाह ने जो कुछ भी बनाया है वह मानव जाति के लाभ के लिए है। एक अहमदी शोधकर्ता का उद्देश्य यह सुनिश्चित करके कि जो भी वैज्ञानिक प्रगति हो रही है, उसका मानव जाति के लाभ के लिए सही तरीके से उपयोग किया जा रहा है, जो कुछ भी वह खोजता है उससे लाभ प्राप्त करना चाहिए।हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने प्रोफेसर क्लेमेंट रिग के साथ बातचीत में जोर देकर कहा कि विज्ञान और धर्म के बीच कोई संघर्ष नहीं है और विज्ञान ने कभी भी पवित्र कुरान या इस्लामी शिक्षाओं के एक भी अक्षर या शब्द का खंडन नहीं किया है। विज्ञान कितना भी विकसित हो जाये यह कभी संभव नहीं होगा। इसके विपरीत, प्रत्येक खोज और प्रत्येक विकास पवित्र कुरान की शिक्षाओं को सत्य और केवल ख़ुदा के अस्तित्व को ही सिद्ध करेगा। पवित्र कुरान हमें विज्ञान से दूर रहने या उसका अध्ययन करने से नहीं रोकता, बिल्कुल नहीं, पवित्र कुरान मोमिनों को अपनी बुद्धि और ख़ुदा प्रदत्त प्रतिभाओं और क्षमताओं का पता लगाने, जांच करने और उपयोग करने का आदेश देता है। जो लोग मानव जाति के लाभ के लिए मानव ज्ञान को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं, उन्हें निश्चित रूप से अल्लाह सर्वशक्तिमान द्वारा उनके प्रयासों के लिए पुरस्कृत किया जाएगा। लेकिन पवित्र कुरान ने चेतावनी दी है कि मनुष्य को प्रकृति के कानून में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए और अप्राकृतिक तरीकों से अल्लाह की रचना को बदलने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, हाल के वर्षों में आनुवंशिक इंजीनियरिंग और जीवित प्राणियों की क्लोनिंग द्वारा वैज्ञानिक मूल्यों की सीमाओं का धीरे-धीरे उल्लंघन किया गया है। ये अनैतिक और खतरनाक प्रयास हैं। इन कर्मों के परिणाम जबकि मनुष्य अपनी सीमाओं से परे जाकर ख़ुदा बनने की कोशिश कर रहा है, निस्संदेह, वे बहुत भयानक होंगे और मानवजाति को विनाश की ओर ले जायेंगे।

उनका अंत न केवल अपने समर्थकों को आखिरत की जहन्नम में धकेलना होगा, बल्कि वे इस दुनिया में भी नरक बनाने के लिए जिम्मेदार होंगे। यह एक ऐसी चीज़ है जिससे हर अहमदी शोधकर्ता और वैज्ञानिक को बचना चाहिए। आपको केवल वही रास्ते अपनाने चाहिए जो मानव जाति के लाभ के लिए हैं और जो अल्लाह तआला की सीमाओं के अनुरूप हैं। हमेशा याद रखें कि पवित्र कुरान द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर रहना एक मोमिन की निशानी है। यदि आप इस प्रकार अपना कार्य करेंगे तो आप महान उपलब्धियाँ प्राप्त करेंगे। और वे मुस्लिम विद्वानों और शिक्षाविदों की उत्कृष्ट प्रतिष्ठा को बहाल करने में सक्षम होंगे।

सर्वशक्तिमान अल्लाह की कृपा से, मध्य युग के दौरान, कई मुस्लिम वैज्ञानिकों, दार्शनिकों और बुद्धिजीवियों ने मानव ज्ञान और समझ को बढ़ावा देने में मानवता पर एक अमिट छाप छोड़ी। उनके शुरुआती प्रयासों ने दुनिया में एक महत्वपूर्ण क्रांति पैदा की और उनके शोध और खोजें अभी भी मौजूद हैं जो आधुनिक विज्ञान और गणित की नींव हैं। उन्होंने अपनी ख़ुदा प्रदत्त बुद्धि और क्षमताओं का उपयोग किया, सर्वशक्तिमान अल्लाह की मदद ली और उसकी रचना पर विचार किया, जिसके परिणामस्वरूप इतिहास ने उन्हें पहचाना और आज भी उन्हें सम्मानित किया जाता है।

उदाहरण के लिए, 2016 में नेशनल ज्योग्राफिक द्वारा "हाउ इस्लामिक साइंस एडवांस्ड मेडिसिन" शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया गया था, जिसमें इस्लाम के शुरुआती दिनों में मुस्लिम वैज्ञानिकों के योगदान के बारे में बताया गया था

इस में लिखा है:"इस्लामिक देशों में चिकित्सकों को मध्य युग के अंत में बहुत सम्मान दिया जाता था। उस समय, चिकित्सा के अध्ययन और अभ्यास को उनके विशाल क्षेत्र में मुस्लिम समाज द्वारा उन्नत किया गया था, जो आधुनिक दक्षिणी स्पेन से ईरान तक फैला हुआ था।"

आगे लिखा है कि

900 के दशक तक, ग्रीक, फ़ारसी और संस्कृत चिकित्सा ग्रंथों के अरबी में अनुवाद की संख्या बढ़ गई और इस्लामी चिकित्सा ने जल्द ही विश्व स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त कर ली। ईसाई, यहूदी, हिंदू और कई अन्य संप्रदायों के विद्वानों ने अरबी को विज्ञान की भाषा के रूप में देखा। विभिन्न धर्मों के डॉक्टरों ने एक साथ काम किया और अरबी में चर्चाएँ और अध्ययन संयुक्त रूप से आयोजित किए गए।

इसी आर्टिकल में आगे लिखा है कि

"बगदाद के क्षितिज पर सबसे चमकीला सितारा निस्संदेह इब्ने सीना था, जो असाधारण गुणों वाला व्यक्ति था... 18 साल की उम्र में ही आप की कई जिल्दों पर आधारित पुस्तक अलक़ानून फित्तिब अर्थात तिब का कानून रहती दुनिया तक प्रसिद्ध तिब्बी कामों में से एक है। यूनानी विचारक जलीनूस (Galen) की चिकित्सा पद्धतियों को अरस्तू के दर्शन के साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास इब्न सीना का है। इस से इस क्षेत्र के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है जो मुसलमानों के विचार और अध्ययन में डाला गया था जिसने न केवल यूनानी संपादकों के कार्यों को पुनर्जीवित किया बल्कि आने वाली शताब्दियों के

लिए विचार के नए पैटर्न को भी उजागर किया। "अल-कानून" का अध्ययन 18वीं सदी तक यूरोपीय चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा किया जाता था, निस्संदेह ऐसा ही होना था इसका मतलब यह था कि प्रकृति विज्ञान, विचार और धर्म में सामंजस्य था।

नेशनल जियोग्राफिक के इस लेख में आगे कहा गया है कि स्पेन में मुस्लिम शासन का काल "बौद्धिक प्रगति का युग" था और 10वीं शताब्दी में कुर्तबा को "यूरोप का सबसे सुसंस्कृत शहर" और "अध्ययन और चिंतन का एक महान केन्द्र वर्णन किया गया है।

द न्यूयॉर्क टाइम्स द्वारा प्रकाशित एक अन्य लेख, हाउ इस्लाम वोन एंड लॉस्ट, द लीड इन साइंस, प्रारंभिक मुस्लिम वैज्ञानिकों के योगदान की खुले तौर पर प्रशंसा करता है।

संपादक लिखते हैं:

"सभ्यताएं सिर्फ टकराती नहीं हैं, वे एक-दूसरे से सीखती हैं।" इस्लाम इसका एक अच्छा उदाहरण है। अरबों और यूनानियों की बौद्धिक बैठक न केवल इस्लाम के लिए, बल्कि यूरोप और पूरे विश्व के लिए इतिहास की महान घटनाओं में से एक है, इसका पैमाना और परिणाम बहुत व्यापक हैं।

लेकिन यह लेख यह भी बताता है कि शुरुआती मुसलमानों के कई योगदानों पर ध्यान नहीं दिया गया है। इस हवाले से लिखा है:

"...इतिहासकारों का कहना है कि वे इस स्वर्ण युग के बारे में बहुत कम जानते हैं। इस युग के कुछ सबसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक कार्यों का अरबी से अनुवाद किया गया था और कई हज़ार पांडुलिपियों को आधुनिक विद्वानों ने कभी नहीं पढ़ा है।"

अत: मुस्लिम विद्वानों के ऐतिहासिक योगदान में कोई संदेह नहीं है।

यह बहुत दुख की बात है कि अधिकांश मुस्लिम जगत की वर्तमान बौद्धिक स्थिति दुखद है।

समय बीतने के साथ, जब मुसलमान अल्लाह तआला से दूर हो गए और उनमें मोमिन से जुड़े गुण तेजी से गायब हो गए, तो जो मुसलमान पहले विज्ञान और अनुसंधान में दुनिया का नेतृत्व करते थे, वे धीरे-धीरे अज्ञानी युग में दाखिल हो गए जो अभी तक जारी है। आविष्कारों और खोजों में अग्रणी होने के बजाय, मुस्लिम ज्ञान का उत्कर्ष समाप्त हो गया और मुसलमान अन्य लोगों की खोजों और आधुनिक तकनीक पर निर्भर हो गए। दुनिया को कुछ देने के बजाय, मुसलमान दुनिया से केवल लेने वाले बन गए हैं, इसलिए जहां दुनिया विज्ञान और ज्ञान प्राप्ति में मुसलमानों के ऐतिहासिक योगदान को मान्यता देती है, वहीं वह दुनिया में आधुनिक मुसलमानों की बौद्धिक स्थिति को खेद की दृष्टि से देखती है।

यदि सामान्य रूप से देखा जाए तो तथ्य यह है कि मुस्लिम दुनिया ने ज्ञान प्राप्त करने और मानवीय प्रयास से ज्ञान को आगे बढ़ाने का अपना जुनून खो दिया है।

मुस्लिम राष्ट्र दुनिया की सुख-सुविधाओं में डूब गए हैं, इसलिए उनमें अब ज्ञान प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करने या ब्रह्मांड का चिंतन करने का उत्साह नहीं रह गया है।

आधुनिक विज्ञान एवं ज्ञान अर्जन में हिलेल ओफ़ेक ने अपने लेख "अरब दुनिया विज्ञान से विमुख क्यों

हुई" में मुसलमानों की विफलता के बारे में बात की है। वह संयुक्त राज्य अमेरिका में क्लेमेंट सेंटर फॉर नेशनल सिक्योरिटी में रिसर्च फेलो हैं। वह मुसलमानों की स्थिति का एक नक्शा खींचते हैं कि मुसलमान, जो विज्ञान और मानव सभ्यता के विकास में अग्रणी थे, ऐसी स्थिति में चले गए हैं कि अब अकादमिक समुदाय में उनके योगदान को हेय दृष्टि से देखा जाता है। वह लिखते हैं कि लगभग 1600 तक मुस्लिम वैज्ञानिकों और विद्वानों की बौद्धिक प्रगति की तुलना में यूरोप कुछ भी नहीं था। वह यह भी बताते हैं कि बीजगणित, अल-ख्वारिज्म, अल-कामी और अल-काली जैसे कितने वैज्ञानिक और गणितीय शब्द अरबी भाषा से आए हैं और ये शब्द दुनिया में इस्लाम के योगदान को दर्शाते हैं।

फिर वह आगे बढ़ते हैं और एक अधिक आधुनिक युग की तस्वीर पेश करते हैं कि मुस्लिम देशों में विज्ञान की वर्तमान स्थिति अतीत में मुसलमानों की गौरवशाली स्थिति के बिल्कुल विपरीत है।

उदाहरण के लिए वह बताते हैं कि इस तथ्य के बावजूद कि दुनिया में 1.6 अरब मुसलमान हैं, मुस्लिम देशों के केवल 2 मुसलमानों ने नोबेल पुरस्कार जीता है। एक और आकलन वह स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हैं कि यदि 46 मुस्लिम देशों को मिला दिया जाए, तो मुस्लिम देशों ने पूरी दुनिया में वैज्ञानिक साहित्य में केवल एक प्रतिशत का योगदान दिया है। इसी प्रकार वे लिखते हैं कि 1989 में संयुक्त राज्य अमेरिका ने दस हज़ार से अधिक वैज्ञानिक लेख (वैज्ञानिक पत्र) प्रकाशित किये, जिनमें से अनेक सन्दर्भ प्रस्तुत किये गये। जबकि पूरे अरब जगत में इसी अवधि में केवल 4 लेख प्रकाशित हुए, जिनमें से आमतौर पर संदर्भ प्रस्तुत किए गए थे। लेखक ने यह भी लिखा है कि 1980 से 2000 के बीच, केवल एक देश, दक्षिण कोरिया ने 16,000 से अधिक बौद्धिक पेटेंट दिए, जबकि अरब ने मिला कर कुल 370 पेटेंट दिए। इन देशों में मिस्र, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात शामिल हैं।

लेख में नोबेल पुरस्कार विजेता प्रोफेसर स्टीवन वेनबर्ग का भी उद्धरण दिया गया है जिसमें उन्होंने मुस्लिम देशों में उत्पादित वैज्ञानिक सामग्रियों की कमी पर चर्चा की है।

प्रोफेसर वेनबर्ग लिखते हैं:

हालाँकि मुस्लिम देशों के प्रतिभाशाली वैज्ञानिक पश्चिमी देशों में उत्पादक रूप से काम कर रहे हैं, लेकिन चालीस वर्षों में मैंने किसी भौतिक विज्ञानी या खगोलशास्त्री का एक भी लेख मुस्लिम देश में काम करते नहीं देखा है।

ज्ञान और विज्ञान की दृष्टि से मुसलमानों और इस्लामी देशों को विश्व का नेतृत्व करना था, लेकिन अब उनका उपहास और अपमान किया जाता है।

इस्लामी दुनिया में शैक्षणिक अज्ञानता के इस दौर में, अहमदी मुस्लिम वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के लिए दुनिया भर के शैक्षणिक क्षेत्रों में इस्लाम के खोए हुए सम्मान और प्रतिष्ठा को बहाल करना एक बड़ी चुनौती है।

तो यह आपका संकल्प होना चाहिए कि आप इस शानदार विद्वत्तापूर्ण शैली की बागडोर संभालें जिसे मध्य युग के महान मुस्लिम विद्वानों और अन्वेषकों द्वारा सुशोभित किया गया था।

यह हमारी परंपरा है कि हर साल जमात अहमदिया ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को स्वर्ण पदक वितरित करती है। लेकिन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय (हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब) ने इस तहरीक की शुरुआत में निर्देश दिया था कि स्वर्ण पदक और छात्रवृत्तियाँ विशेष रूप से उन लोगों को दी जानी चाहिए जो विज्ञान में उत्कृष्ट हैं।

जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय द्वारा इस तहरीक को शुरू करने के कुछ समय बाद डॉ. अब्दुस सलाम साहब ने नोबेल पुरस्कार जीता और उनकी दिली इच्छा थी कि कम से कम 100 अहमदी मुसलमान डॉ. अब्दुल सलाम के नक्शेकदम पर चलें और जब जमात अपने दूसरे चरण में प्रवेश करे तो तो यह अहमदी मुसलमान प्रमुख वैज्ञानिक बन जाएँ। अहमदिया जमात की दूसरी सदी के तीन दशक अब बीत चुके हैं। दुख की बात है कि मुझे कहना पड़ रहा है और मुझे लगता है कि हमने इस अवधि में विश्व प्रसिद्धि हासिल करने वाला कोई वैज्ञानिक नहीं बनाया है। साथ ही मैंने पिछले 13 या 14 वर्षों में अहमदी छात्रों को सीधे या मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया के माध्यम से निर्देश दिए हैं कि शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में जाएँ और अपने क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने का प्रयास करें। लेकिन अभी तक यह नहीं कहा जा सकता कि नतीजे मेरी आशा के करीब भी आये हैं, जहाँ तक मुझे पता है, शायद ही किसी अहमदी ने दुनिया के वैज्ञानिक या बौद्धिक विकास में कोई महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हो।
यहां मैं संयुक्त राज्य अमेरिका में अहमदी वैज्ञानिकों के संघ के प्रयासों की सराहना करना चाहता हूं जो काफी सक्रिय हैं और विज्ञान और कुरान पर नियमित बैठकें करते हैं। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होने वह असाधारण काम किया है जिसकी उनसे आशा है।

यहां इकट्ठे होने और सम्मेलन के आयोजन के परिणामस्वरूप, आप सभी को अपने चुने हुए क्षेत्र में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का अपना मिशन बनाना चाहिए। आपको उनके नक्शेकदम पर चलने के दृढ़ संकल्प के साथ यहां से जाना चाहिए। आपको इस बात पर विचार करना चाहिए कि आप कैसे विकास कर सकते हैं दुनिया की बेहतर समझ-बूझ कैसे पैदा करें जिससे मानवता लाभान्वित हो सके। वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के रूप में यह आपकी ज़िम्मेदारी है कि आप अपने दिमाग और प्रतिभा का उपयोग करें और ऐसे तरीके और साधन खोजें जिनके द्वारा आप महान वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हासिल कर सकें। एक-दूसरे से संपर्क करें, विशेषकर उन लोगों से जो आपके जैसे ही शोध के क्षेत्र में हैं और एक-दूसरे से सीखें। आपसी बातचीत और समन्वय से आप बेहतर परिणाम हासिल करने में सफल रहेंगे जोश और जुनून के साथ काम करें और सबसे बढ़कर अपने शैक्षणिक काल के हर कदम पर अल्लाह सर्वशक्तिमान की मदद लें और उसकी शान को अपने सामने रखें।

इन अनुरोधों के बाद, मैं दुआ करता हूं कि अल्लाह तआला आप सभी को अपने-अपने क्षेत्रों में प्रगति करने और बड़ी सफलता हासिल करने की क्षमता प्रदान करे। आशा है कि हम जल्द ही दुनिया भर में अहमदी मुसलमानों के नेतृत्व में इस्लामी बौद्धिक श्रेष्ठता और विकास के एक नए स्वर्ण युग की शुरुआत देखेंगे। आमीन (त्रैमासिक पत्रिका इस्माइल अप्रैल-जून 2021 पृष्ठ 10-16)

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۔ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045

e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ
(النحل 11)

Prop : Sk. Ishaque

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FFT Fruits

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal.com flipkart.com
amazon.com Paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO LEATHERS

Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3